आज़ादी का अमृत महोत्सव

मॉयल भारती

अंक 8 : अक्टूबर – मार्च 2023

मॉयल लिमिटेड, 1– ए, काटोल रोड, नागपुर – 440013

श्री अजित कुमार सक्सेना दिनांक 29.12.2022 को मॉयल लिमिटेड मे अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक का कार्यभार ग्रहण किया

सतर्कता जागरुकता सप्ताह - 2022

संपादक मंडल

अजित कुमार सक्सेना
अध्यक्ष
सह प्रबंध निदेशक

उषा सिंह
निदेशक
(मानव संसाधन)

त्रिलोचन दास
महाप्रबंधक (कार्मिक)

एन. डी. पाण्डेय
कंपनी सचिव

पूजा वर्मा
राजभाषा अधिकारी

अनुक्रमाणिका

क्रं.	विषय	पेज नं.
1	इस्पात मंत्री जी का संदेश	2
2	इस्पात राज्यमंत्री जी का संदेश	3
3	अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक जी का संदेश	4
4	निदेशक (वित्त) जी का संदेश	5
5	निदेशक (मा.सं.) जी का संदेश	6
6	निदेशक (वाणिज्य) जी का संदेश	7
7	निदेशक (उ.एवं.यो.) जी का संदेश	8
8	मुख्य सर्तकता अधिकारी जी का संदेश	9
9	संपादकीय	10
10	मॉयल लिमिटेड के बारे मे	11-12
11	खनन	13 -15
12	हिंदी के प्रयोग के लिये 2022-23 का वार्षिक कार्यक्रम	16
13	हिंदी अंग्रेजी शब्द (इस्पात से संबंधित)	17-18
14	टिप्पणियाँ	19
15	संवैधानिक प्रावधान	20-23
16	हिंदी सलाहकार समिती की बैठक, वाराणसी	24
17	हिंदी दिवस एवं द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन	25-26
18	मॉयल में हिन्दी पखवाडा 2022	27-28
19	सतर्कता सप्ताह	29
20	काव्य गोष्ठी का आयोजन	30
21	विश्व हिंदी दिवस पर कार्यशाला का आयोजन	31
22	नराकास के बारे में	32
23	शहिद	33-36
24	सुभद्रा कुमारी चौहान के काव्य में राष्ट्रीय चेतना	37-40
25	दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय चेतना	41-44
26	लेख	45-46
27	भ्रष्टाचार पर लगाम कसने की दिशा मे पहल	47
28	क्या चल रहा है ?	48
29	संसाधनो को कहीं निगल न जाए बढती आबादी	49
30	पर्यावरण और परिस्थितीकी	50
31	स्वयं को जाने	51-52
32	आत्मविश्वास और बेटो को दे अच्छे संस्कार	53
33	सद्भावना और दिपक कविता	54
34	स्लोगन	55
35	कर भला तो हो भला	56
36	हिंदी आशुलिपी परिचय	57-58
37	सुपर गोल्ड अवॉर्ड	59
38	कैमरे मे कैद कुछ पल	60-62
39	मॉयल – समाचार पत्र की कुछ झलकियाँ	63-64

ज्योतिरादित्य मा. सिंधिया
JYOTIRADITYA M. SCINDIA

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

मंत्री
नागर विमानन एवं इस्पात मंत्रालय
भारत सरकार, नई दिल्ली
Minister of
Civil Aviation and Steel
Government of India, New Delhi

संदेश

आप सभी को नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं । संप्रेणता मानव का अद्वितीय गुण है जो संसार में मानव को अन्य प्राणियों से श्रेष्ठता प्रदान करता है। मानव के भावों, अनुभवों, आशाओं, आकांक्षाओं, विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए भाषा ही सशक्त माध्यम होती है। भाषा के माध्यम से मानव अपने अतीत के गौरव, वर्तमान की उपलब्धियों तथा भावी जीवन की योजनाओं का संप्रेषण करता है। किसी भी राष्ट्र के विकास में भाषा का विकास महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

हिन्दी भारत वर्ष की राजभाषा होने के साथ, विशाल भू-भाग की जनभाषा एवं देशवासियों को एक सूत्र में बांधने वाली संपर्क भाषा भी है। संपूर्ण देशवासियों के मध्य भाषाई सेतु निर्माण में हिन्दी का महत्वपूर्ण योगदान है। समय के साथ स्वयं में समावेशी बनकर हिन्दी ने अपने आपको पहले से अधिक सशक्त रूप में स्थापित किया है।

पत्रिका के आगामी अंक के लिए शुभकामनाएं ।

(ज्योतिरादित्य एम. सिंधिया)

Ministry of Civil Aviation : Room No. 291, B-Block, Rajiv Gandhi Bhawan, Safdarjung Airport, New Delhi-110003
Tel. : 91-11-24610350, 24632991. Fax : 91-11-24610354
Ministry of Steel : Room No. 192, 1st Floor, Udyog Bhawan, New Delhi-110011 Tel. : +91-11-23062345, Fax : +91-11-23061395

आज़ादी का अमृत महोत्सव

G20 भारत 2023 INDIA

सत्यमेव जयते

फग्गन सिंह कुलस्ते
FAGGAN SINGH KULASTE

इस्पात एवं
ग्रामीण विकास राज्य मंत्री
भारत सरकार
उद्योग भवन, नई दिल्ली–110011
MINISTER OF STATE FOR STEEL
AND RURAL DEVELOPMENT
GOVERNMENT OF INDIA
UDYOG BHAWAN, NEW DELHI-110011

संदेश

आप सभी को वर्ष-2023 की हार्दिक शुभकामनाएं। राजभाषा हिन्दी विचार अभिव्यक्ति का अत्यधिक सशक्त माध्यम है हिन्दी की यही सार्वभौम शक्ति देश को पूर्व से पश्चिम, उत्तर से दक्षिण तक एक सूत्र में बांध कर रखने में अहम भूमिका निभाती है।

देश की स्वतन्त्रता से पूर्व स्वतन्त्रता आंदोलन से लेकर वर्तमान तक हिन्दी ने राष्ट्रीयता की भावना को प्रबलता प्रदान की है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारतीयता का परिचय दिया है। आधुनिक विश्व में भारत की विजय पताका को अधिक वेग से फहराने की शक्ति प्रदान की है। विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर देश को गौरवान्वित किया है। सनातन संस्कृति के प्रवाह को न केवल गति प्रदान की है, बल्कि नवीनतम उपलब्धियों को भी जन – जन तक पहुंचाने का कार्य किया है।

पत्रिकाएं किसी भी संस्था / कार्यालय की वैचारिक, उत्पादनशीलता तथा मानवीय विकास का दर्पण होती है। इसके द्वारा संस्थान का उत्कृष्ट भूतकाल, श्रेष्ठ प्रगतिशील वर्तमान काल तथा आशाओं-आकांक्षाओं से परिपूर्ण भविष्यकाल भी परिलक्षित होता है।

मुझे प्रसन्नता है कि मॉयल लिमिटेड अपनी गृह पत्रिका 'मॉयल भारती' का नवीन अंक प्रकाशित करने जा रहा है।

पत्रिका के नए अंक के लिए अनंत शुभकामनाएं

(फग्गन सिंह कुलस्ते)

Room No. 146, Udyog Bhawan, New Delhi-110011 Phone No. 011-23063810, 23061370, Fax : 011-23062703
Delhi Residence : 8, Safdarjung Lane, New Delhi-110011, Phone : 011-23792158

अजित कुमार सक्सेना

अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक

मॉयल लिमिटेड, नागपुर

संदेश

आप सभी को नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं...!

हिंदी विश्व की एक प्राचीन समृद्ध तथा महान भाषा होने के साथ ही हमारी राजभाषा भी है। हिंदी विश्व में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली तीसरी सबसे बड़ी भाषा है। हिंदी जन साधारण की भाषा है और सभी कल्याणकारी योजनाएं तभी प्रभावी बन सकेंगी जब उनकी जानकारी आम जन की भाषा में उन तक पहुंचेगी। पत्रिका के माध्यम से भाषा के विकास में सहयोग मिलता है।

मुझे आशा है कि मॉयल लिमिटेड के राजभाषा अनुभाग द्वारा हिंदी के प्रचार-प्रसार व प्रोत्साहन की दिशा में किए जा रहे प्रयास भविष्य में भी इसी प्रकार जारी रहेंगे। मैं पत्रिका के आठवें अंक के प्रकाशन से जुड़े सभी कार्मिकों का अभिनंदन करते हुए आप सभी को बधाई एवं हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

अजित सक्सेना

अजित कुमार सक्सेना

राकेश तुमाने

निदेशक (वित्त)

मॉयल लिमिटेड, नागपुर

संदेश

आप सभी को नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं...!

प्रिय साथियों,

आज हिन्दी राजभाषा, राष्ट्रभाषा, संपर्क भाषा से बढ़कर विश्व भाषा बनने की तैयारी कर रही है। भाषा और साहित्य एक ही सिक्के के दो पहलू है। भाषा है तो साहित्य है और जहां साहित्य है वहां भाषा का स्वतः ही विकास हो जाता है। हिन्दी भाषा की जड़े प्राचीन भारत की संस्कृत भाषा में तलाशी जा सकती है।

देश भर की विभिन्न भाषाएं लोक संस्कृतियां जब हिन्दी भाषा-भाषी के बीच आत्मसात हो जाती है तो हम सभी वर्ग,समाज, जाति-भेद भूलकर उसमें रम जाते है। पत्रिका के माध्यम से हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बल मिलेगा और कार्मिकों की रचनात्मक प्रतिभा विकसित होगी। सभी रचनाकारों को एवं पत्रिका के आठवें अंक के लिए बधाई और शुभकामनाएं देता हूँ।

राकेश तुमाने

उषा सिंह

निदेशक (मानव संसाधन)
मॉयल लिमिटेड, नागपुर

संदेश

आप सभी को नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं...।

प्रिय हिन्दी प्रेमियों !

हिन्दी भाषा सभी भारतीय भाषाओं को आपस में जोड़ने की महत्वपूर्ण कड़ी है। इसके साथ-साथ यह देश की संपर्क भाषा है जो विभिन्न भाषा वाले क्षेत्रों को आपस में जोड़ने का भी कार्य करती है। अतः राजभाषा का सम्मान करते हुए समस्त कार्मिकों को अपने दैनिक कार्यालयीन कार्यों में हिन्दी का उपयोग करना चाहिये। हिन्दी न केवल आम आदमी की भाषा है बल्कि विज्ञान, उद्योग और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी तेजी से आगे बढ़ रही है। आज हर क्षेत्र में भाषा के रूप में हिन्दी की आवश्यकता महसूस की जा रही है।

राजभाषा हिन्दी में कार्य करना हमारा नैतिक कर्तव्य ही नहीं बल्कि संवैधानिक दायित्व भी है। हमे सरल, सहज व सुगम हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए ताकि जन मानस तक हमारी बात आसानी से पहुँच सके। हिन्दी भारत की संपर्क भाषा के रूप में स्थापित है और राजभाषा के रूप में गौरान्वित है। राजभाषा के प्रति सम्मान और समर्पण भारतीयता की पहचान है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका अपने उद्देश्य में सफल रहेगी एवं हिन्दी भाषा के विकास में महत्वपूर्ण सहयोग देगी।

पत्रिका के उज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं।

उषा सिंह

उषा सिंह

पी. व्ही. व्ही. पटनायक

निदेशक (वाणिज्य)
मॉयल लिमिटेड, नागपुर

संदेश

आप सभी को नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं...।

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि मॉयल लिमिटेड के राजभाषा अनुभाग की पत्रिका 'मॉयल भारती का आठवाँ अंक प्रकाशित होने जा रहा है। कार्यालयीन पत्रिकाएं निरंतर संवाद का एक ऐसा मंच प्रदान करती है, जो कार्मिकों के लिए सहज सुलभ है और उन्हे कार्यालयीन परिवेश में अपनी रचनात्मक अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का माध्यम उपलब्ध कराती है।

कार्यालयीन पत्रिकाएं कार्यालय और उसकी कार्यप्रणाली, उसके विविध प्रकार्यों से भी पाठकों को परिचित कराती है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी शुभकामनाएं।

पी.व्ही.व्ही. पटनायक

एम. एम. अब्दुल्ला

निदेशक (उत्पादन एवं योजना)
मॉयल लिमिटेड, नागपुर

संदेश

आप सभी को नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं...।

मेरे लिए यह प्रसन्नता की बात है कि मॉयल लिमिटेड के राजभाषा अनुभाग द्वारा 'मॉयल भारती' पत्रिका का आठवां अंक प्रकाशित होने जा रहा है।

राजभाषा कार्यान्वयन कि दृष्टि से कार्यालय की हिन्दी गृह पत्रिकाएं हिन्दी भाषा के प्रयोग एवं प्रचार–प्रसार के लिए अत्यंत सशक्त माध्यम उपलब्ध कराती है और कार्मिकों को हिन्दी के प्रति प्रेरित करते हुए, उन्हे अपनी मातृभाषा, अपने राष्ट्र की प्रमुख संपर्क भाषा और राजभाषा हिन्दी को हृदय से अपनाने, उसका संवर्धन और संरक्षण करने का प्रण जागृत करती हैं।

इसलिए इन पत्रिकाओं का निरंतर प्रकाशन अवश्य होना चाहिए। पत्रिका के निरंतर प्रकाशन के लिए प्रकाशन से जुड़े कार्मिकों, रचनाकारों और लेखकों को मैं शुभकामनाएं देता हूँ।

एम. एम.अब्दुल्ला

प्रदीप कामले
मुख्य सतर्कता अधिकारी
मॉयल लिमिटेड, नागपुर

संदेश

आप सभी को नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं ...।

प्रिय साथियों

किसी भी देश का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित करने में भाषा महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली भूमिका का निर्वाह करती है। भारत जैसे विशाल देश में सरकार एवं जनता के बीच परस्पर समन्वय, बेहतर समझ और तालमेल स्थापित करने में प्रयुक्त हिन्दी भाषा का राजभाषा के रूप में अभिषेक इसी संकल्पना को मूर्त रूप देते हुए किया गया है।

हमारा नैतिक एवं संवैधानिक दायित्व है कि हम अपना सम्पूर्ण सरकारी काम काज राजभाषा हिन्दी में करें। पत्रिका के माध्यम से हिन्दी भाषा का प्रचार-प्रसार होता है तथा कामकाज में रुचि पैदा करने का कार्य भी सहज हो जाता है। पत्रिका के माध्यम से भाषा के विकास में सहयोग मिलता है। मैं मॉयल भारती पत्रिका के सफल प्रकाशन एवं उज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

प्रदीप

प्रदीप कामले

संपादकीय

प्रिय साथियों,

आजादी के अमृत महोत्सव काल के दौरान मॉयल लिमिटेड में आयोजित हिन्दी पखवाड़ा 2022 की गतिविधियों को समेटे हुए पत्रिका का यह अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिए जाने वाले दिवस को स्मरणीय बनाने के उद्देश्य से इस वर्ष भी कार्यालय में प्रत्येक स्तर पर हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया गया।

हिन्दी पखवाड़ा की दृष्टि से देश मे वर्ष 2022 रचानात्मक रहा। केन्द्र सरकार के समस्त कार्यालयों, बैंको तथा उपक्रमो के लिए हिन्दी दिवस का शुभारंभ, सूरत (गुजरात) में आयोजित हिन्दी दिवस समारोह 2022 तथा द्वितिय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन से किया गया। इस गरिमामयी कार्यक्रम का आयोजन माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री, भारत सरकार श्री अमित शाह की अध्यक्षता में हुआ। कार्यक्रम मे व्याख्यान के लिए देश के उन विद्वानो को आमंत्रित किया गया था, जिन्होने हिन्दी के प्रति विशेष आग्रह रखते हुए अपने कार्यक्षेत्र में सफलाताएं अर्जित की है।

भारत में ही नही अपितु विदेशो मे भी बसे भारतीयों को भी आपस में जोड़ने का कार्य राजभाषा हिन्दी निःसंदेह राष्ट्रीय अखंडता को मजबूत करती है।

मॉयल भारती का हर अंक पहले से अधिक निखर रहा है। इसके लिए हमारे वरिष्ठ नेतृत्व साहित्य विद्वान समीक्षकों एवं पाठकों का मै हदय से आभार व्यक्त करती हूँ। इस अंक पर भी आपकी अनुभवी दृष्टि हमारा मार्गदर्शन करेगी इन्ही अपेक्षाओं के साथ आपको नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं।

पूजा वर्मा
संपादक – मॉयल भारती

मॉयल लिमिटेड : संक्षिप्त जानकारी

मॉयल लिमिटेड, भारत सरकार की सरकारी उपक्रम खनन कंपनी है, जिसे मिनिरत्न होने का गौरव प्राप्त है। वर्ष 2022 तक कंपनी ने अपनी गौरवशाली यात्रा कें 60 वर्ष पूरे कर लिये है। इन छ: दशको के कालखंड में कंपनी ने महत्वपूर्ण उपलब्धियॉ अर्जित की है।

मॉयल को मूल रूप से वर्ष 1896 में सेंट्रल प्रोस्पेक्टिंग सिंडिकेट के रूप में स्थापित किया गया था। जिसे बाद में सेंट्रल प्रोविंस मैंगनीज अयस्क कंपनी लिमिटेड (सीपीएमओ) के रूप में बदल दिया गया। सन् 1962 में भारत सरकार और सी.पी एम.ओ. के बीच एक समझौते के परिणाम स्वरूप मॉयल का गठन किया गया। मॉयल इस्पात मंत्रालय के प्रशासनिक नियत्रंण में 100% सरकारी कंपनी बन गई।

वर्तमान में मॉयल 11 खानों का संचालन करती है। सात खाने महाराष्ट्र राज्य के नागपुर एवं भंडारा जिले में एवं और चार खाने मध्यप्रदेश के बालाघाट जिले में स्थित है।

मनसर खान मॉयल लिमिटेड की सबसे पुरानी खान है। यहॉ सन 1900 ई. से सीपीएमओ द्वारा खनन कार्य प्रारंभ किया गया। मनसर खान का विस्तार 2.7 कि.मी. में है। यह मुख्यालय से 45 कि.मी. दूरी पर स्थित है। कांद्री खान, मनसर खान के समीप ही है। यहॉ खनन कार्य 1903 ई. में प्रारम्भ किया गया। वर्तमान में कांद्री खान का कुल पट्टा धारित क्षेत्र 83.06 हे. है। यहॉ वर्ष 1980 मे वर्टिकल शॉफ्ट की स्थापना की गई।

बेलडोंगरी खान, मॉयल लिमिटेड की एक जटिल खान है। यह नागपुर जिले के पारशिवनी तहसील के बेलडोंगरी गांव में स्थित है। यह एक भूमिगत खान है। मॉयल लिमिटेड की गुमगांव खान सन 1902 ई. में प्रारम्भ की गई। खान का कुल पट्टा क्षेत्र 85.89 हे. है। खान को पास स्थित गांव के नाम पर गुमगांव नाम दिया गया। चिखला खान महाराष्ट्र राज्य के उत्तर पूर्वी भाग में स्थित भंडारा जिले में है। इस खान का कुल पट्टा 150.646 हे. है। वर्तमान में खान का काम चिखला मेन (वर्टिकल सेक्शन) एव चिखला बी सेक्शन में भूमिगत तरीके से किया जाता

है। महाराष्ट्र के भंडारा जिले में स्थित डोंगरी बुजुर्ग खान एक ओपन कास्ट खान है जो मैगनीज डाइऑक्साइड अयस्क का उत्पादन करती है, जिसका उपयोग बैटरी उद्योग द्वारा किया जाता है।

बालाघाट खान कंपनी की सबसे बड़ी खदान है। यह मध्यप्रदेश के बालाघाट जिले में स्थित है। इस खान में वर्ष 1903 ई. में खनन कार्य प्रारंभ किया गया।इस खान का कुल पट्टा 259.589 हें. है। बालाघाट खदान एशिया की सबसे गहरी और सबसे बड़ी भूमिगत मैगनीज खान है। तिरोड़ी खान में खनन कार्य वर्ष 1902 मे प्रारंभ की गई। यह शुरू में 1902 से 1934 तक टाटा मैगनीज ओर के तत्वाधान में संचालित होता रहा। वर्ष 1962 तक तिरोड़ी खान एशिया की सबसे बड़ी ओपन कास्ट खान थी। सीतापटोर खान पहले तिरोड़ी खान के अंतर्गत कार्यान्वित होती थी। उत्पादन की दृष्टि से इसे एक स्वतंत्र खान के रूप में सन् 2000 मे मान्यता प्रदान की गई। उकवा खान मॉयल लिमिटेड मुख्यालय से सबसे दूर स्थित खान है। यहां खनन कार्य वर्ष 1904 ई. मे किया गया। यह एशिया की सबसे बड़ी एवं पहली हवाई रोपवे लाइन का निर्माण किया गया था। उकवा से बालाघाट खान तक अयस्क के परिवहन हेतु इसका उपयोग किया जाता था। जिसकी लंबाई 33 कि.मी. थी।

कंपनी ने अपने उत्पादन मे वृद्धि के साथ-साथ इसकी गुणवत्ता का भी पूरा ध्यान रखा है। आज कंपनी की गणना वैश्विक स्तर के खनन कंपनीयों में की जाती है। मॉयल ने इलेक्ट्रोन लाईटिंग मैंगनीज डाइऑक्साइड (ईएमडी) की 1500 मीट्रिक टन प्रतिवर्ष क्षमता का निर्माण करने के लिए स्वदेशी तकनीक पर आधारित एक सयंत्र की स्थापना की है। इस उत्पाद का उपयोग सूखी बैटरी सेल के निर्माण में किया जाता है। मॉयल मे फेरो मैगनीज का भी एक संयत्र है जिसकी क्षमता 12000 मीट्रिक टन प्रतिवर्ष है।

कंपनी का दूरगामी निगमित नीतियों के समुचित कार्यान्वयन से संदर्भित हर वित वर्ष में कुल आय बढ़ता ही रहा है। इन ऑकड़ो से कंपनी के एक महत्वपूर्ण राजस्व अर्जक की छवि निर्मित हुई है। हर दस वर्ष कें समयान्तराल पर खनिजों के उत्पादन में वृद्धि दर्ज हुई है। कंपनी ने न केवल खनन उत्पादन बल्कि हर क्षेत्र में बेहतर कार्यशैली से लक्ष्य से आगे ही अर्जित किया है।

कंपनी के सुचारू रूप से संचालन के लिए सुरक्षा नीति, निवेशक नीति, पर्यावरण नीति, जोखिम नीति, सतर्कता नीति इत्यादि कार्यान्वित की गई। इसके अतिरिक्त कई व्यापारिक हित की नीति भी है। वित्तिय वर्ष 2021-22 के दौरान मॉयल को 15 दिसम्बर 2010 को नेशनल स्टॉक एक्सचेंज एवं बाम्बे स्टॉक एक्सचेज मे सूचीबद्ध किया गया। वर्तमान में कंपनी में भारत सरकार का 53.84%, महाराष्ट्र सरकार का 5.11%, मध्यप्रदेश सरकार का 5.40% एवं 35.65% सार्वजनिक है।

कंपनी अपने सामाजिक उत्तरदायित्व के लिए पूर्णत सजग है। ग्रामीण क्षेत्रों में वृक्षारोपण, सड़क निर्माण, विद्यालयों का निर्माण, स्वच्छता कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। इसके अतिरिक्त युवाओं को रोजगार के लिए आवश्यक प्रशिक्षण उपलब्ध कराना, अप्रेन्टिस प्रशिक्षण प्रदान करना एवं छात्राओं का उच्चतर शिक्षा हेतु प्रोत्साहन जैसे कई कार्यक्रमों में सहयोग प्रदान किया जाता है। इसी क्रम में नियमित सामाजिक उत्तरदायित्व के अंतर्गत महाराष्ट्र राज्य में नागपुर जिले के उमरेड एवं सावनेर तहसील में दो ऑक्सीजन संयत्र स्थापित किये गये है।

सामाजिक सेवा के साथ-साथ राष्ट्र की सेवा के लिए भी मॉयल दृढ़ संकल्प है। मॉयल की हिन्दी पत्रिका मॉयल भारती को राजभाषा कीर्ति पुरस्कार प्राप्त होना न केवल गौरव की बात है बल्कि सभी कर्मचारियों के हिन्दी कामगाज को भी प्रदर्शित करता है। राजभाषा संबंधी वार्षिक कार्यक्रम पर पूरे गंभीरता के साथ अमल किया जाता है।

खनन

पृथ्वी के गर्भ से धातुओं, अयस्कों, औद्योगिक तथा अन्य उपयोगी खनिजों को बाहर निकालना खनिकर्म या खनन (Mining) कहलाता हैं। आधुनिक युग में खनिजों तथा धातुओं की खपत इतनी अधिक हो गई है कि प्रति वर्ष उनकी आवश्यकता करोड़ों टन की होती है। इस खपत की पूर्ति के लिए बड़ी-बड़ी खानों की आवश्यकता का उत्तरोत्तर विकास हो रहा है। फलस्वरूप खनिकर्म ने विस्तृत अभियांत्रिकी का रूप धारण कर लिया है। इसको खनन अभियांत्रिकी कहते हैं।

संसार के अनेक देशों में, जिनमें भारत भी एक है, खनिकर्म बहुत प्राचीन समय से ही प्रचलित है। वास्तव में प्राचीन युग में धातुओं तथा अन्य खनिजों की खपत बहुत कम थी, इसलिए छोटी-छोटी खान ही पर्याप्त थी। उस समय ये खानें 100 फुट की गहराई से अधिक नहीं होती थीं। जहाँ पानी निकल आया करता था वहाँ नीचे खनन करना असंभव हो जाता था। उस समय आधुनिक ढंग के पंप आदि यंत्र नहीं थे। खनिजो से जुडे संदर्भ (Reference)-जिन कच्ची धातुओ मे खनिज मिलते है उन्हे अयस्क कहा जाता है। खुदाई करके अयस्क निकलने वाले स्थान को खदान या खान (Mine) कहा जाता है। यदि धरातल पर ऊपर-ऊपर से खुदाई की जाए तो उसे उत्खनन (Quarrying) कहते है और यदि भू-गर्भ से खनिज प्राप्त किए जाएं तो उस कार्य को खनन (Mining) कहते है।

किसी भी प्रकार के खनन विकास के लिये खनन के पूर्व की दो अवस्थाएँ होती है - पूर्वेक्षण (Prospecting) तथा गवेषण (Exploration) बहुत महत्वपूर्ण हैं। पूर्वेक्षण के अंतर्गत खनिजों तथा अयस्कों की खोज, निक्षेपों का सामान्य अध्ययन तथा खनन की संभावनाओं को सम्मिलित किया जाता है। इन तथ्यों की जानकारी के लिए किन साधनों की सहायता ली जाये, यह उस क्षेत्र की आवश्यकताओं पर निर्भर करता है। गवेषणात्मक कार्य के अंतर्गत संभाव्य निक्षेपों का विस्तार और क्षेत्र, उनकी औसत मोटाई, खनिज की संभाव्य मात्रा तथा मूल्य, निक्षेपों के अंतर्गत खनन योग्य क्षेत्रों का वितरण, खान को खोलने, विकसित करने तथा खनन को प्रभावित करने वाली अवस्थाएँ एवं खान के विकास के लिये उपयुक्त विधि का निश्चय आदि महत्वपूर्ण तथ्य सम्मिलित हैं। गवेषणात्मक के तीन मुख्य अंग हैं : तलीय गवेषण, वेधन (Drilling) तथा भूमिगत गवेषण।

खनिकर्म के मुख्य विभाग

खनिकर्म को मुख्य रूप से दो भागों में विभाजित किया गया हैं.

तलीय खनन (Surface Mining)

भूमिगत खनन (Underground Mining)

तलीय खनन :– इस प्रकार के खनन में धरातल के ऊपर जो पहाड़ आदि हैं उनको तोड़कर खनिज प्राप्त किए जाते हैं, जैसे चूने का पत्थर, बालू का पत्थर, ग्रैनाइट, लौह अयस्क आदि। इस विधि में मुख्य कार्य पत्थर को तोड़ना ही हैं। शिलाएँ कठोरता, मजबूती तथा दृढता में भिन्न होती हैं। जो शिलाएँ कोमल होती हैं, उनको तोड़ने में कोई कठिनाई नहीं होती। ऐसी शिलाओं के उदाहरण जिप्सम, चीनी मिट्टी, सेलखड़ी आदि हैं। जिन शिलाओं में धातुएँ मिलती हैं वे अत्यंत कठोर होती हैं, जैसे ग्रैनाइट, डायनेमाइट आदि। इन शिलाओं को विस्फोटक पदार्थो द्वारा तोड़ा जाता हैं। प्राचीन तथा मध्यकालीन युगों में खनन की विधियां नितांत अनुपयुक्त थीं। धीरे धीरे खनन विधियों का विकास हुआ और उनमें बारूद आदि का उपयोग होने लगा। विगत एक शताब्दी में डायनेमाइट, जेलिग्नाइट, नाइट्रोग्लिसरीन आदि अनेक प्रकार के अन्य विस्फोटक पदार्थो का विकास हुआ। खनन में विस्फोटक पदार्थो का उपयोग करने के लिये पहले शिलाओं में छिद्र बनाया जाता है तथा उसमें ये विस्फोटक जो कारतूस के रूप में मिलते हैं, रख दिए जाते हैं और विद्युत व्दारा या फ्यूज लगाकर उनमें आग लगा दी जाती हैं। विस्फोट के साथ ही पत्थर के टुकड़े टुकड़े हो जाते हैं। फिर इनको घन आदि से तोड़कर और छोटा कर लिया जाता है, जिससे उन्हें हटाने में सुविधा हो। पत्थरों में छिद्र बनाने के लिय जैक हैमर आदि अनेक प्रकार के वेधन यंत्रों का उपयोग किया जाता है। ये यंत्र संपीड़ित वायु अथवा किसी द्रव ईंधन द्वारा संचालित होते हैं। छिद्रों की गहराई 3- 4 फुट तक तथा व्यास 1-1/2 इंच से लेकर 2-1/2 इंच तक होता है। कभी कभी शिलातल पर ऐसे बहुत से छिद्र कर दिए जाते है और सब में विस्फोटक कारतूस भर दिए जाते हैं तथा विद्युत द्वारा सभी को एक साथ ही जला दिया जाता है, इससे पूरे का पूरा पहाड़ टूट जाता है। भारत में इस प्रकार के तलीय खनन के उदाहरण चूना पत्थर तथा लोह अयस्क आदि हैं। पत्थरों के हटाने के लिये बड़ी खानों में रेल की पटरियाँ बिछाकर ठेलों का उपयोग किया जाता है। इस काम में यांत्रिक खुरपे भी बड़े उपयोगी सिद्ध हुए हैं। ये खुरपे उन पत्थरों को उठाकर बड़े ट्रकों में भर देते हैं।

खुले हुए गड्ढों से खनन करके अयस्क तथा खनिज निकालने की विधि ताँबा, लोहा, कोयला, चूना पत्थर तथा अन्य औद्योगिक खनिजों के उत्खनन में प्रयुक्त होती है। कुछ अंशों तक यह विधि सोने, चाँदी, जस्ते तथा सीसे के खनन में भी सहायक सिद्ध हुई हैं। इस प्रकार के खनन में खुदाई करने वाले विशाल यंत्र तथा अयस्क या खनिज को लादकर खान से बाहर ले जाने वाले यंत्र प्रमुख है। खुदाई के लिये शक्तिशाली यांत्रिक खुरपों का प्रयोग होता है। ये खुरपे विस्फोट द्वारा उड़ाए हुए पत्थरों के टुकड़ों को ट्रक अथवा मालगाड़ी के डिब्बों में भर देते हैं। कम दूरी के लिये खनन गाड़ियों (Cars), डिब्बों तथा ट्रकों से काम चल जाता है और अधिक दूरी के लिये भारी ट्रकों का उपयोग किया जाता है जो लदे हुए पत्थरों को स्वचालित ढंग से किसी एक स्थान पर इकट्ठा कर देते हैं।

खुली हुई खनिजों के रूप में खनन करने से पूर्व उस क्षेत्र की स्थलाकृति के मानचित्र बनाए जाते हैं और फिर खाइयाँ, परीक्षाणात्मक गड्ढे तथा वेधन द्वारा निक्षेप की मोटाई तथा खनिज की उपलब्ध मात्रा का निश्चय किया जाता है। पानी के निकास की दशाओं पर भी सावधानी से विचार किया जाता है। खनन कार्य प्रारंभ होने पर सबसे पहले निक्षेपों पर स्थित मिट्टी हटाने का काम होता हैं। कभी कभी बड़ी खानों को खोलने के लिये मिट्टी हटाने में 2-3 वर्ष तक लग जाते हैं। खनन कार्य चोटी से प्रारंभ होता है तथा एक के बाद एक सपाट बेंचें तब तक काटी जाती हैं जब तक तलहटी नहीं आ जाती। आजकल आधुनिक बोरिंग यंत्रों के आविष्कार के फलस्वरूप 25-30 फुट तक मोटाई की बेंचें काटना सरल हो गया हैं। इन बेंचों के ऊपर हल्के ट्रक तथा लोहे की पटरियों पर चलने वाले ठेलों के आने जाने का प्रबंध किया जाता है। साधारणतया बेंच बनाने के लिये शिलाओं में कई छिद्र किए जाते है तथा विस्फोट करने के लिये लचकीली विस्फोटक टोपिकाओं का प्रयोग किया जाता है।

भुमिगत खननः- उन अनेक प्रकार के खनिजों तथा अयस्कों के उत्खनन में भूमिगत खनन का सहारा लेना पड़ता है जिनका खुली हुई खानों के रूप में खनन, गहराई पर स्थित होने के कारण, आर्थिक दृष्टि से अनुपयुक्त अथवा असंभव होता है। यद्यपि भूमिगत खनन में भी बड़ी पूंजी की आवश्यकता होती है, तथापि इन निक्षेपों के खनन के लिये कोई अन्य विकल्प नहीं है। भूमिगत निक्षेप दो प्रकार के हो सकते हैं :

1) जो स्तर रूप में मिलते हैं, जैसे कोयला तथा

2) धात्विक पट्टिकाएँ।

इन दोनों प्रकार के निक्षेपों की प्रकृति नितांत भिन्न होती है, इसलिये इनके खनन की विधियाँ भी सुविधानुसार अलग अलग होती है। खानों में कार्य आरंभ होने से पहले पूर्वेक्षण तथा गवेषणात्मक कार्यो को सावधानी से समाप्त कर लिया जाता है। इसके पश्चात् खान का विकास कार्य प्रारंभ होता है। सर्वप्रथम कूप (shaft) बनाए जाते हैं। इनका व्यास 10-12 फुट तक हो सकता है। यदि निक्षेपों की गइराई कम होती है तो प्रवणकों का ही निर्माण कर लिया जाता है। यदि आवश्यकता हुई तो भूमिगत मार्ग तथा गैलरियाँ भी बना ली जाती हैं जिन शिलाओं से होता हुआ कूप जाता है, यदि वे सुदृढ नहीं होती तो इस्पात, सीमेंट आदि के अस्तर की भी आवश्यकता पड़ती है। भूमिगत खनन में कूपों का बड़ा महत्व है, क्योंकि कर्मचारियों का खान में आना जाना, खनिज पदार्थो का बाहर आना, वायु का संचालन तथा खान से पानी बाहर फेंकने के लिये पंपों का स्थापन इन्हीं से संचालित होता है। किसी भी खान में कम से कम दो कूप अवश्य होते हैं।

खनिजों तथा अयस्कों को तोड़ने में फावड़े, कुदाली तथा सब्बल अथवा यंत्रों या विस्फोटक पदार्थो की सहायता ली जाती है। प्रयत्न इस बात का किया जाता है कि खनिज की अधिकाधिक मात्रा निकाल ली जाये, किंतु इससे खान में शिलाओं का संतुलन बिगड़ने लगता है। यह बहुत कुछ अंशों तक शिलाओं के लचीलेपन तथा उनकी शक्ति पर निर्भर करता है। खान में शिलाओं का संतुलन बिगड़ने से बचाने के लिये खान की दीवारों तथा छत को सहारे की आवश्यकता होती है। इसके लिए जिस स्तर पर कार्य चल रहा है उसमें स्तंभ छोड़ दिए जाते है और आसपास से खनिज निकाल लिया जाता है। किंतु इसमें खनिज की काफी मात्रा का ह्रास होता है। इसलिये आजकल प्रयत्न यह किया जाता है कि खाली स्थानों में बालू अथवा वैसा ही कोई अन्य पदार्थ भर दिया जाये तथा उन स्तंभों का खनिज भी निकाल लिया जाये।

यह विधि अधिकांश भारतीय कोयला खानों में प्रयुक्त होती है। इसके अतिरिक्त, लकड़ी, लोहा, कंक्रीट, पत्थर, ईंट आदि भी प्रयुक्त होते है। खनिज पदार्थ को खान से ऊपर लाने के लिये पिंजड़े के आकार का झूला, इस्पात के रस्से तथा वाइंडिंग इंजन की आवश्यकता होती है। खानों के अंदर खनिज को एक स्थान से दूसरे स्थान तक लाने के लिये ट्रालियाँ प्रयुक्त होती हैं, जो अधिकतर लोहे की पटरियों पर चलती हैं। कूप से होकर खान के कर्मचारी भी खान में इन्हीं झूलों से उतरते हैं। कुछ खानों में सीढ़ियाँ भी काम में आती हैं।

भूमिगत खानों में उपयुक्त प्रकाश तथा शुद्ध वायु के आवागमन का प्रबंध अत्यंत आवश्यक है। अधिकांश खानों में अब विद्युत् प्रकाश उपलब्ध है। वायु के आवागमन के लिये वायुमार्ग बड़े होने चाहिए तथा वायु का प्राकृतिक प्रवाह नहीं रुकना चाहिए। कुछ स्थितियों में इसके लिये कुछ यांत्रिक साधनों की भी आवश्यकता होती है। ये यंत्र खान में शुद्ध वायु का संचालन करते हैं। खान में कूप खोदते समय, अथवा जल पटल आ जाने पर, पानी का प्राकृतिक प्रवाह प्रारंभ हो जाता है। यह पानी नाली बनाकर एक जगह ले जाया जाता है तथा वहाँ से पंप द्वारा खान से बाहर निकाल दिया जाता है।

हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2022-23 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्य विवरण	"क" क्षेत्र	"ख" क्षेत्र	"ग" क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100% 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100% 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 65% 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र को 100% के राज्य / संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय / व्यक्ति	1. ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 90% 2. ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 90% 3. ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4. ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र को 90% के राज्य / संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय / व्यक्ति	1. ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 55% 2. ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 55% 3. ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4. ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र को 55% के राज्य / संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय / व्यक्ति
2. हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना		100%	100%	100%
3. हिंदी में टिप्पण		75%	50%	30%
4. हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम		70%	60%	30%
5. हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती		80%	70%	70%
6. हिंदी में डिटेक्शन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक व्दारा)		100%	100%	100%
7. हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण,आशुलिपी)		100%	100%	100%
8. व्दिभाषी प्रशिक्षण साम्रगी तैयार करना		100%	100%	100%
9. जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल सामग्री अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक, सीडी/ डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर		50%	50%	50%
10. कंम्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की व्दिभाषी रुप में खरीद		100%	100%	100%
11. वेबसाईट व्दिभाषी हो		100%	100%	100%
12. नागरीक चार्टर तथा जन सूचना १००% बोर्डो आदि का प्रदर्शन व्दिभाषी हो		100%	100%	100%
13. मंत्रालयों /विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों (उ.स./निदे.सं.स.) व्दारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत		25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण		25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
(iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण मे अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण		वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण		
14. राजभाषा संबंधी बैठकें (क) हिंदी सलाहकार समिति (ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 2 बैठकें वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक) वर्ष में 4 बैठके (प्रति तिमाही एक बैठक)		
15. कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया साहित्य का हिंदी अनुवाद				
16. मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बॅकों उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हों ।		40%	30% (न्यूनतम अनुभाग)	20%

सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, "क" क्षेत्र में कार्य का 40%
"ख" क्षेत्र में 25% और "ग" क्षेत्र में 15% कार्य हिंदी में किया जाए।

हिन्दी अंग्रेजी शब्द (इस्पात से संबंधित)

Steel Sector	इस्पात क्षेत्र	Steel Production	इस्पात उत्पादन
Drilling (Min.)	प्रवेधा	Mining Activities	खनन गतिविधियां
Iron Ore	लौह अयस्क	Blast furnace	धमन भट्टी
Supply of Steel	इस्पात की आपूर्ति	Lime stone	चुना पत्थर
Steel Plant	इस्पात सयंत्र	Ferro alloys	लौह मिश्र धातु
Steel Industry	इस्पात उद्योग	Power plant	विद्युत सयंत्र
CPSE – Central Public Sector Enterprises	केन्द्रीय सार्वजनिक क्षेत्र उद्यम	3000 MTPA	3000 मिलियन / मीट्रिक टन प्रतिवर्ष
DPE – Department Public Enterprises	सार्वजनिक उद्यम विभाग	Mines and Minerals (Development & Regulation) Act	खान एवं खनिज (विकास एवं विनिमय) अधिनियम
Wildsteel	उग्र इस्पात	Mine Developer cum Operator	खान विकासकर्ता एवं प्रचालक
Scrap	उच्छिष्ट	Finished Steel products	तैयार इस्पात उत्पाद
Pollution Control Device	प्रदूषण नियंत्रण उपकरण	Export Promotion Counsel	निर्यात संवर्धन परिषद
Domestic Steel	घरेलू इस्पात	Mining project	खनन परियोजना
Ministry of Steel	इस्पात मंत्रालय	Mineral rich states	खनिज संपन्न राज्य
Captive Mine	कैप्टिव खान	Steel Making	इस्पात निर्माण
Quality Control	गुणवत्ता नियंत्रण	Steel Export Policy	इस्पात निर्यात नीति
Sponge Steel	स्पंज इस्पात	Ash	राख
Land Acquisition	भूमि अधिग्रहण	Bar steel	शलाका इस्पात
Raw Material	कच्चा माल	Belt conveyor	पट्टा वाहित्र
Steel Making Capacity	इस्पात विनिर्माण क्षमता	Manganese museum	मैगनीज संग्रहालय
Techno-Economic Performance	तकनीकि–आर्थिक कार्य निष्पादन	Steel Scrap Recycling	इस्पात स्क्रैप पुनचर्क्रण
Beneficiation	सज्जीकरण	Power procurement	बिजली की खरीद
Basic slag	क्षारकीय धातुमल	Electroplating	वैद्युतलेपा

हिन्दी अंग्रेजी शब्द (इस्पात से संबंधित)

Basic steel	क्षारकीय इस्पात	Erosion	अपरदन
Black ore	कृष्ण अयस्क	Feeder	प्रभरण
Black slag	कृष्ण धातुमल	Ferro-manganese	फेरो मैगनीज
Blast	वात्या	Fusible	संगलीय
Blasting	स्फोटा, प्रक्षेपण	Galvanized sheet	जस्तेदार चादर
Brass coupling	पीतल युग्मा	Granulation	कणिकाय
Brittleness	भंगुरता	Gyration	परिभ्रमण
Bruising	खरोंच	Hardening	कठोरता
Bucket hoist	बाल्टी उच्चालक	Industrial ore	औद्योगिक अयस्क
Calibration	अंशांका	Ingot	पिंड
Cast iron	स्चकित लोहा	Iron foundry	लोहा ढलाई शाला
Charge	आवेश	Manganese steel	मैगनीज इस्पात
Churning	मंथा	Metal	धातु
Coal blending	कोयला संमिश्रण	Metallurgical	धातु कर्मीय
Coiled bar	कुंडलित शलाका	Open-cast mining	विवृत्त खनन
Compacting	संहतिकरण	Overheating	अधिताप
Compressed air	संपीडित वायु	Process control	प्रक्रिया नियत्रंण
Converter	परिवर्तित्र	Pulverized	चूर्णित
Corrosion	संक्षारण	Rare-earth alloy	दुर्लभ–मृदा मिश्र धातु
Crude steel	अपरिष्कृत इस्पात	Refining	परिष्करण
Reflux	पश्चवाही	Self-corrosion	स्व संक्षारण
Relining	पुनआस्तरण	Slurry	गारा
Roll	बेला	Smelting	प्रगला
Rolling	बेल्ला	Super cooling	अतिशिलता
Rust	जंग	Synthesis	संश्लेषण
Saddening	स्वल्पपारण	Texture	संव्यूति
Sand	बालू	Thermostat	तापस्थाप
Sand stone	बलुआ पत्थर	Tumbling	संलोटा
Tunnel	सुरंग	Wire gauge	तारप्रमापी

टिप्पणियाँ

Approved	अनुमोदित
Sanctioned	स्वीकृत/मंजूर
Please file	कृपया फाईल करें
Please discuss	कृपया चर्चा करें
Reliable evidence is lacking	विश्वनीय साक्ष्य का अभाव है
Sanctioned as proposed	सुझाव के अनुरूप स्वीकृत
Suspended from service	नौकरी से निलंबित किया जाना
Urgent action is required	तुरंत कार्यवाही अपेक्षित है
Report of progress is still awaited	प्रगति की रिपोर्ट अभी प्रतीक्षित है
Formal approval is necessary	औपचारिक अनुमोदन आवश्यक है
Trace out the previous paper	पहले के कागजातों का पता लगाए
Utmost care may be taken	अत्यधिक सावधानी रखी जाए
Verified and found correct	सत्यापन किया गया एवं सही पाया गया
Verified copy of certificate	प्रमाण पत्र की सत्यापित प्रति
Without any further delay	बिना किसी विलम्ब के
With reference to	के संदर्भ में
Your approval is essential	आपकी स्वीकृति अनिवार्य है
Your advise is essential	आपकी सलाह अनिवार्य है
Temporary post may be converted into permanent	अस्थायी पदो को स्थायी पदो मे बदल दिया जाए
Seen, thanks	देख लिया, धन्यवाद
I agree	मै सहमत हूँ
Kindly prepare a self-contained note in the matter	कृपया इस मामले में एक स्व-निहित नोट तैयार करें
Draft approved as amended	प्रारुप को संशोधित रुप में अनुमोदित किया गया
May please accept the application	आवेदन स्वीकार कर लिया जाए
Inform accordingly	तदनुसार सूचित करें
Kindly reply	कृपया उत्तर दे
Fix a date of meeting	बैठक की तारीख तय करो
Case is under consideration	मामला विचारधिन है
Proposal accepted	प्रस्ताव स्वीकार है
Look into this matter	इस मामले को देखें
Do the needful	आवश्यक कार्यवाही करे
Issue today	आज ही जारी करे

सवैधानिक प्रावधान

(भारत के संविधान मे राजभाषा से संबधित भाग-17)

अध्याय - 1 - संघ की भाषा

अनुच्छेद 120 - संसद में प्रयोग की जाने वाली भाषा

1. भाग **17** में किसी बात के होते हुए भी, किंतु अनुच्छेद **348** के उपबंधों के अधीन रहते हुए, संसद में कार्य हिंदी में या अंग्रेजी में किया जाएगा परंतु, यथास्थिति, राज्य सभा का सभापति या लोक सभा का अध्यक्ष अथवा उस रूप में कार्य करने वाला व्यक्ति किसी सदस्य को, जो हिंदी में या अंग्रेजी में अपनी पर्याप्त अभिव्यक्ति नहीं कर सकता है, अपनी मातृ-भाषा में सदन को संबोधित करने की अनुज्ञा दे सकेगा।

2. जब तक संसद विधि द्वारा अन्यथा उपबंध न करे तब तक इस संविधान के प्रारंभ से पंद्रह वर्ष की अवधि की समाप्ति के पश्चात यह अनुच्छेद ऐसे प्रभावी होगा मानो ''या अंग्रेजी में'' शब्दों का उसमें से लोप कर दिया गया हो।

अनुच्छेद 210 - विधान-मंडल में प्रयोग की जाने वाली भाषा

1. भाग **17** में किसी बात के होते हुए भी, किंतु अनुच्छेद **348** के उपबंधों के अधीन रहते हुए, राज्य के विधान-मंडल में कार्य राज्य की राजभाषा या राजभाषाओं में या हिंदी में या अंग्रेजी में किया जाएगा परंतु, यथास्थिति, विधान सभा का अध्यक्ष या विधान परिषद का सभापति अथवा उस रूप में कार्य करने वाला व्यक्ति किसी सदस्य को, जो पूर्वोक्त भाषाओं में से किसी भाषा में अपनी पर्याप्त अभिव्यक्ति नहीं कर सकता है, अपनी मातृभाषा में सदन को संबोधित करने की अनुज्ञा दे सकेगा।

2. जब तक राज्य का विधान-मंडल विधि द्वारा अन्यथा उपबंध न करे तब तक इस संविधान के प्रारंभ से पंद्रह वर्ष की अवधि की समाप्ति के पश्चात यह अनुच्छेद ऐसे प्रभावी होगा मानो '' या अंग्रेजी में '' शब्दों का उसमें से लोप कर दिया गया हो : परंतु हिमाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय और त्रिपुरा राज्यों के विधान-मंडलों के संबंध में, यह खंड इस प्रकार प्रभावी होगा मानो इसमें आने वाले''पंद्रह वर्ष'' शब्दों के स्थान पर ''पच्चीस वर्ष'' शब्द रख दिए गए हों, परंतु यह और कि अरूणाचल प्रदेश, गोवा और मिजोरम राज्यों के विधान-मंडलों के संबंध में यह खंड इस प्रकार प्रभावी होगा मानो इसमें आने वाले '' पंद्रह वर्ष '' शब्दों के स्थान पर '' चालीस वर्ष '' शब्द रख दिए गए हों।

अनुच्छेद 343- संघ की राजभाषा

1. संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी, संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा।

2. खंड (1) में किसी बात के होते हुए भी, इस संविधान के प्रारंभ से पंद्रह वर्ष की अवधि तक संघ के उन सभी शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाता रहेगा जिनके लिए उसका ऐसे प्रारंभ से ठीक पहले प्रयोग किया जा रहा था, परन्तु राष्ट्रपति उक्त अवधि के दौरान, आदेश द्वारा, संघ के शासकीय प्रयोजनों में से किसी के लिए अंग्रेजी भाषा के अतिरिक्त हिंदी भाषा का और भारतीय अंकों के अंतर्राष्ट्रीय रूप के अतिरिक्त देवनागरी रूप का प्रयोग प्राधिकृत कर सकेगा।

3. इस अनुच्छेद में किसी बात के होते हुए भी, संसद उक्त पन्द्रह वर्ष की अवधि के पश्चात, विधि द्वारा क. अंग्रेजी भाषा का, या ख. अंकों के देवनागरी रूप का, ऐसे प्रयोजनों के लिए प्रयोग उपबंधित कर सकेगी जो ऐसी विधि में विनिर्दिष्ट किए जाएं।

अनुच्छेद 344 –राजभाषा के संबंध में आयोग और संसद की समिति

1. राष्ट्रपति, इस संविधान के प्रारंभ से पांच वर्ष की समाप्ति पर और तत्पश्चात ऐसे प्रारंभ से दस वर्ष की समाप्ति पर, आदेश द्वारा, एक आयोग गठित करेगा जो एक अध्यक्ष और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट विभिन्न भाषाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले ऐसे अन्य सदस्यों से मिलकर बनेगा जिनको राष्ट्रपति नियुक्त करे और आदेश में आयोग द्वारा अनुसरण की जाने वाली प्रक्रिया परिनिश्चित की जाएगी।

2. आयोग का यह कर्तव्य होगा कि वह राष्ट्रपति को

क. संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए हिंदी भाषा के अधिकाधिक प्रयोग,

ख. संघ के सभी या किन्हीं शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा के प्रयोग पर निर्बधनों,

ग. अनुच्छेद 348 में उल्लिखित सभी या किन्हीं प्रयोजनों के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा,

घ. संघ के किसी एक या अधिक विनिर्दिष्ट प्रयोजनों के लिए प्रयोग किए जाने वाले अंकों के रूप,

च. संघ की राजभाषा तथा संघ और किसी राज्य के बीच या एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच पत्रादि की भाषा और उनके प्रयोग के संबंध में राष्ट्रपति द्वारा आयोग को निर्देशित किए गए किसी अन्य विषय, के बारे में सिफारिश करे।

3. खंड (2) के अधीन अपनी सिफारिशें करने में, आयोग भारत की औद्योगिक, सांस्कृतिक और वैज्ञानिक उन्नति का और लोक सेवाओं के संबंध में अहिंदी भाषी क्षेत्रों के व्यक्तियों के न्याय संगत दावों और हितों का सम्यक ध्यान रखेगा।

4. एक समिति गठित की जाएगी जो तीस सदस्यों से मिलकर बनेगी जिनमें से बीस लोक सभा के सदस्य होंगे और दस राज्य सभा के सदस्य होंगे जो क्रमश: लोक सभा के सदस्यों और राज्य सभा के सदस्यों द्वारा आनुपातिक प्रतिनिधित्व पद्धति के अनुसार एकल संक्रमणीय मत द्वारा निर्वाचित होंगे।

5. समिति का यह कर्तव्य होगा कि वह खंड (1) के अधीन गठित आयोग की सिफारिशों की परीक्षा करे और राष्ट्रपति को उन पर अपनी राय के बारे में प्रतिवेदन दे।

6. अनुच्छेद 343 में किसी बात के होते हुए भी, राष्ट्रपति खंड (5) में निर्दिष्ट प्रतिवेदन पर विचार करने के पश्चात उस संपूर्ण प्रतिवेदन के या उसके किसी भाग के अनुसार निदेश दे सकेगा।

अध्याय 2 – प्रादेशिक भाषाएं

अनुच्छेद 345 –राज्य की राजभाषा या राजभाषाएं

अनुच्छेद 346 और अनुच्छेद 347 के उपबंधों के अधीन रहते हुए, किसी राज्य का विधान–मंडल, विधि द्वारा, उस राज्य में प्रयोग होने वाली भाषाओं में से किसी एक या अधिक भाषाओं को या हिंदी को उस राज्य के सभी या किन्हीं शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा या भाषाओं के रूप में अंगीकार कर सकेगा, परंतु जब तक राज्य का विधान–मंडल, विधि द्वारा, अन्यथा उपबंध न करे तब तक राज्य के भीतर उन शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाता रहेगा जिनके लिए उसका इस संविधान के प्रारंभ से ठीक पहले प्रयोग किया जा रहा था।

अनुच्छेद 346

एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच या किसी राज्य और संघ के बीच पत्रादि की राजभाषा

संघ में शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग किए जाने के लिए तत्समय प्राधिकृत भाषा, एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच तथा किसी राज्य और संघ के बीच पत्रादि की राजभाषा होगी, परंतु यदि दो या अधिक राज्य यह करार करते हैं कि उन राज्यों के बीच पत्रादि की राजभाषा हिंदी भाषा होगी तो ऐसे पत्रादि के लिए उस भाषा का प्रयोग किया जा सकेगा।

अनुच्छेद 347

किसी राज्य की जनसंख्या के किसी भाग द्वारा बोली जाने वाली भाषा के संबंध में विशेष उपबंध

यदि इस निमित्त मांग किए जाने पर राष्ट्रपति का यह समाधान हो जाता है कि किसी राज्य की जनसंख्या का पर्याप्त भाग यह चाहता है कि उसके द्वारा बोली जाने वाली भाषा को राज्य द्वारा मान्यता दी जाए तो वह निदेश दे सकेगा कि ऐसी भाषा को भी उस राज्य में सर्वत्र या उसके किसी भाग में ऐसे प्रयोजन के लिए, जो वह विनिर्दिष्ट करे, शासकीय मान्यता दी जाए।

अध्याय 3 – उच्चतम न्यायालय, उच्च न्यायालयों आदि की भाषा

अनुच्छेद 348

उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालयों में और अधिनियमों, विधेयकों आदि के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा

1. इस भाग के पूर्वगामी उपबंधों में किसी बात के होते हुए भी, जब तक संसद् विधि द्वारा अन्यथा उपबंध न करे तब तक–

अ. उच्चतम न्यायालय और प्रत्येक उच्च न्यायालय में सभी कार्यवाहियां अंग्रेजी भाषा में होंगी,

ब.

क. संसद् के प्रत्येक सदन या किसी राज्य के विधान–मंडल के सदन या प्रत्येक सदन में पुन:स्थापित किए जाने वाले सभी विधेयकों या प्रस्तावित किए जाने वाले उनके संशोधनों के,

ख. संसद या किसी राज्य के विधान–मंडल द्वारा पारित सभी अधिनियमों के और राष्ट्रपति या किसी राज्य के राज्यपाल द्वारा प्रख्यापित सभी अध्यादेशों के, और

ग. इस संविधान के अधीन अथवा संसद या किसी राज्य के विधान–मंडल द्वारा बनाई गई किसी विधि के अधीन निकाले गए या बनाए गए सभी आदेशों, नियमों, विनियमों और उपविधियों के, प्राधिकृत पाठ अंग्रेजी भाषा में होंगे।

2. खंड(1) के उपखंड (क) में किसी बात के होते हुए भी, किसी राज्य का राज्यपाल राष्ट्रपति की पूर्व सहमति से उस उच्च न्यायालय की कार्यवाहियों में, जिसका मुख्य स्थान उस राज्य में है, हिन्दी भाषा का या उस राज्य के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाली किसी अन्य भाषा का प्रयोग प्राधिकृत कर सकेगा, परंतु इस खंड की कोई बात ऐसे उच्च न्यायालय द्वारा दिए गए किसी निर्णय, डिक्री या आदेश को लागू नहीं होगी।

3. खंड (1) के उपखंड (ख) में किसी बात के होते हुए भी, जहां किसी राज्य के विधान–मंडल ने,उस विधान–मंडल में पुन:स्थापित विधेयकों या उसके द्वारा पारित अधिनियमों में अथवा उस राज्य के राज्यपाल द्वारा

प्रख्यापित अध्यादेशों में अथवा उस उपखंड के पैरा (IV) में निर्दिष्ट किसी आदेश, नियम, विनियम या उपविधि में प्रयोग के लिए अंग्रेजी भाषा से भिन्न कोई भाषा विहित की है वहां उस राज्य के राजपत्र में उस राज्य के राज्यपाल के प्राधिकार से प्रकाशित अंग्रेजी भाषा में उसका अनुवाद इस अनुच्छेद के अधीन उसका अंग्रेजी भाषा में प्राधिकृत पाठ समझा जाएगा।

अनुच्छेद 349 भाषा से संबंधित कुछ विधियां अधिनियमित करने के लिए विशेष प्रक्रिया

इस संविधान के प्रारंभ से पंद्रह वर्ष की अवधि के दौरान, अनुच्छेद **348** के खंड **(1)** में उल्लिखित किसी प्रयोजन के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा के लिए उपबंध करने वाला कोई विधेयक या संशोधन संसद के किसी सदन में राष्ट्रपति की पूर्व मंजूरी के बिना पुर:स्थापित या प्रस्तावित नहीं किया जाएगा और राष्ट्रपति किसी ऐसे विधेयक को पुर:स्थापित या किसी ऐसे संशोधन को प्रस्तावित किए जाने की मंजूरी अनुच्छेद **344** के खंड **(1)** के अधीन गठित आयोग की सिफारिशों पर और उस अनुच्छेद के खंड **(4)** के अधीन गठित समिति के प्रतिवेदन पर विचार करने के पश्चात ही देगा, अन्यथा नहीं।

अध्याय 4- विशेष निवेश

अनुच्छेद 350 -व्यथा के निवारण के लिए अभ्यावेदन में प्रयोग की जाने वाली भाषा

प्रत्येक व्यक्ति किसी व्यथा के निवारण के लिए संघ या राज्य के किसी अधिकारी या प्राधिकारी को, यथास्थिति, संघ में या राज्य में प्रयोग होने वाली किसी भाषा में अभ्यावेदन देने का हकदार होगा।

अनुच्छेद 350 क. प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की सुविधाएं

प्रत्येक राज्य और राज्य के भीतर प्रत्येक स्थानीय प्राधिकारी भाषाई अल्पसंख्यक-वर्गों के बालकों को शिक्षा के प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की पर्याप्त सुविधाओं की व्यवस्था करने का प्रयास करेगा और राष्ट्रपति किसी राज्य को ऐसे निदेश दे सकेगा जो वह ऐसी सुविधाओं का उपबंध सुनिश्चित कराने के लिए आवश्यक या उचित समझता है।

अनुच्छेद 350 ख. भाषाई अल्पसंख्यक-वर्गों के लिए विशेष अधिकारी

1. भाषाई अल्पसंख्यक-वर्गों के लिए एक विशेष अधिकारी होगा जिसे राष्ट्रपति नियुक्त करेगा।

2. विशेष अधिकारी का यह कर्तव्य होगा कि वह इस संविधान के अधीन भाषाई अल्पसंख्यक-वर्गों के लिए उपबंधित रक्षोपायों से संबंधित सभी विषयों का अन्वेषण करे और उन विषयों के संबंध में ऐसे अंतरालों पर जो राष्ट्रपति निर्दिष्ट करे,राष्ट्रपति को प्रतिवेदन दे और राष्ट्रपति ऐसे सभी प्रतिवेदनों को संसद के प्रत्येक सदन के समक्ष रखवाएगा और संबंधित राज्यों की सरकारों को भिजवाएगा।

अनुच्छेद 351 हिंदी भाषा के विकास के लिए निदेश

संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिंदुस्थानी में और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यत: संस्कृति से और गौणत: अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।

हिंदी सलाहकार समिति की बैठक, वाराणसी (उ.प्र.)

दिनांक 31 अगस्त 2022 को वाराणसी (उ.प्र.) में माननीय इस्पात एवं ग्रामीण विकास राज्य मंत्री श्री फग्गन सिंह कुलस्ते जी की अध्यक्षता में इस्पात मंत्रालय की पुर्नगठित हिन्दी सलाहकार समिति की तीसरी बैठक का आयोजन किया गया। बैठक का शुभांरभ माननीय मंत्री महोदय, माननीय सांसद गण, उपस्थित समिति सदस्य गण एवं उच्चाधिकारियों के द्वारा द्वीप प्रज्वलन के पश्चात् पुस्तक एवं पुष्प-कलिका भेंट कर विधिवत प्रारम्भ की गई। सदस्य सचिव श्री साकेश प्रसाद सिंह, मुख्य लेखा नियत्रंक एवं प्रभारी राजभाषा ने बैठक में उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत करते हुये बताया कि इस्पात मंत्रालय और इसके उपक्रम राजभाषा के नियमों, वार्षिक कार्यक्रम और नीतियों का पूर्ण रूप सें अनुपालन करते है। इस्पात मंत्रालय के अधिन 23 अनुभाग एवं 8 उपक्रम है जिसमें हिन्दी के प्रचार प्रसार के लिए हिन्दी पखवाडा का आयोजन किया जाता है।

अपर सचिव महोदया, सुश्री रूचिका चौधरी गोविल ने बताया कि पिछली बैठक में उपस्थित माननीय सदस्यों द्वारा दिये गये सुझावों से हिन्दी के प्रसार को नई दिशा मिली है।

मॉयल, नागपुर से उपस्थित श्री एम.पी. चौधरी (सीएमडी) जी ने बताया किं मॉयल के वेबसाइट सर्वप्रथम हिंदी में खुलती है। मॉयल में वेतनपर्ची एवं विजिटिंग कार्ड द्विभाषी है। हम हिन्दी सलाहकार समिति के निर्देशों का अनुपालन करते हुए आगे बढ़ते रहेगें।

साथ ही मंत्रालय के अधिन अन्य उपक्रमों के प्रमुखो ने भी अपने कार्यालयों में हिन्दी की उपयोग एवं प्रसार प्रचार के लिये किये गये प्रयासो के बारे में जानकारी प्रदान की एवं बैठक में उपस्थित हिन्दी सलाहकार समिति के सदस्यो ने भी क्रमश: अपने विचार रखे।

माननीय इस्पात राज्य मंत्री, फग्गन सिंह कुलस्ते जी ने बैठक मे उपस्थित समिति के सभी सदस्यों और मंत्रालय के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों एवं उपक्रमो के अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशकगण को बधाई देते हुए कहा कि हिंदी को व्यवहार में लाने वाले और हिन्दी से संबधित सभी प्रतिनिधियों की उपस्थिति स्वागत योग्य है। उन्होने प्रसन्नता व्यक्त की कि हिन्दी की बैठक के लिए भारतीय संस्कृति, धर्म, कला और सभ्यता के शहर 'वाराणसी' का चयन किया गया। समिति के निमंत्रण पर सब लोग पधारे, यह हिन्दी में रूचि का प्रतीक है जो पिछली बैठकों मे भी देखा गया है। हिन्दी को अच्छा, सरल और प्रभावशाली बनाने के लिए उपक्रमों के अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशको ने अच्छा कार्य किया है। अपने विचारो के अंत में उन्होने माननीय सदस्यों, मंत्रालय व राजभाषा प्रभाग के अधिकारियों, उपक्रमो के अध्यक्ष सहप्रबंध निदेशको को शुभकामनाएं, बधाई एवं धन्यवाद ज्ञापित किया।

अंत में अपर सचिव एवं वित्तिय सलाहकार श्रीमति सुकृति लिखी द्वारा अध्यक्ष महोदय सहित सभी को धन्यवाद् ज्ञापित कर सभा का समापन किया गया।

हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

हिन्दी दिवस एवं द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन

संविधान सभा ने 14 सितम्बर 1949 को हिन्दी को राजभाषा के रूप में अंगीकार किया और तब से इस दिवस की स्मृति में, प्रतिवर्ष 14 सितम्बर 'हिन्दी दिवस' के रूप में मनाया जाता है। संविधान सभा द्वारा सौपे गए संवैधानिक और प्रशासनिक उत्तरदायित्वों तथा संविधान की भावना के अनुरूप तथा प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं सद्भावना की नीति के साथ, राजभाषा हिन्दी का प्रचार-प्रसार करने और इसके प्रयोग को बढ़ाने के निरन्तर प्रयास किए जाते है। इसी तारतम्य में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा हिन्दी दिवस एवं द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री जी की अध्यक्षता में भव्य एवं गरिमामय स्वरूप में 14-15 सितम्बर को सूरत (गुजरात) में किया गया। इस अवसर पर विभिन्न केंद्रिय मंत्री, राज्य मंत्री सहित गृह मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारियों तथा देशभर के हिंदी से जुड़े विद्वानों तथा हिंदी कार्यालयों/संगठनो के उच्चाधिकारी उपस्थित रहें। साथ ही संपूर्ण देश के वर्तमान में कार्यरत 527 नराकास के अध्यक्षो ने भी अपनी उपस्थिती दर्ज कीं।

हिन्दी दिवस एवं द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन फोटो की – झलकीयाँ

हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन

14 सितम्बर से 29 सितम्बर 2022

मॉयल लिमिटेड, मुख्यालय नागपुर में दिनांक 14 सितम्बर 2022 से 29 सितम्बर 2022 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। इसी परिपेक्ष्य में दिनांक 19 सितम्बर 2022 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में विभिन्न स्थानो से वक्ताओं को आमंत्रित किया गया था।

कार्यक्रम में अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक श्री मुकुंद पी. चौधरी, निदेशक वित्त श्री राकेश तुमाने, निदेशक मानव संसाधन श्रीमती उषा सिंह, निदेशक वाणिज्य श्री पी.व्ही.व्ही.पटनायक, मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री प्रदीप कांबले, विशेष अतिथि श्री गोकर्णनाथ शुक्ल, मुख्य अतिथि श्री देशपाल सिंह राठौर, हिंदी सलाहकर समिति सदस्य एवं अतिथि श्री मनोज पाण्डेय, नागपुर विश्वविद्यालय की उपस्थिति में दीप प्रज्वलित कर कार्यशाला का शुभांरभ किया गया।

निदेशक मानव संसाधन जी ने सभा को स्वागत भाषण के साथ संबोधित किया एवं संबोधन में कहा किसी लोक तांत्रिक देश मे सरकारी कामकाज की भाषा तभी सार्थक भूमिका अदा कर सकती है जब वह देश के जन सामान्य से जुड़ी हो और प्रयोग करने मे आसान हो। ज्यादा से ज्यादा लोग समझते हो और जन सामान्य में लोकप्रिय हो। हिंदी की इन्ही विशेषताओं को ध्यान में रखते हुये 14 सितम्बर 1949 के दिन हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। साथ ही कहा की मॉयल में राजभाषा विभाग अपेक्षा के अनुरूप कार्य कर रहा है एवं भविष्य में भी इसे बरकरार रखा जायेगा।

कार्यक्रम में अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक, सभी निदेशक गण, श्रीमती आभा शुक्ला जी, प्रिंसीपल सेक्रेटरी वित्त, महाराष्ट्र शासन, अतिथिगण, कार्यपालक निदेशक (तकनिकी), सभी महाप्रबंधक, सभी विभाग प्रमुख एवं मॉयल कामगार संगठन के महामंत्री एवं पदाधिकारी व सभी अधिकारी/कर्मचारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत में आमंत्रित सभी वक्ताओं को स्मृति चिन्ह भेंट स्वरूप दी गई। 30 सितम्बर 2022 को काव्य गोष्ठी का आयोजन एवं पखवाडा का समापन किया गया है।

समापन कार्यक्रम में अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक श्री मुकुन्द चौधरी, निदेशक वित्त श्री राकेश तुमाने, एवं निदेशक वाणिज्य श्री पी.व्ही.व्ही पटनायक की उपस्थिती रही। काव्य गोष्ठी का आयोजन एवं पखवाडा का समापन के दौरान पुरस्कार वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। काव्य गोष्ठी के दौरान कवि श्री दिनेश देहांती कवि श्री साहेबलाल एवं कवि श्री विनोद यादव जी को आमंत्रित किया गया था. हिंदी पखवाडा के दौरान सभी खदानो व मुख्यालय से सर्वाधिक हिंदी में पत्राचार करने वाले विभाग एवं खदान को पुरस्कार दिया गया।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह (आयोजन एवं समापन)

मॉयल लिमिटेड में दिनांक 31.10.2022 से 06.11.2022 तक सर्तकता जागरूकता सप्ताह का आयोजन किया गया। सप्ताह का शुभारंभ दिनांक 31.10.2022 को मॉयल भवन, नागपुर के भूतल में स्थित निगमित प्रशिक्षण केद्र में दीप प्रज्वलित कर किया गया। कार्यक्रम में मॉयल के अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक, निदेशक (वित्त), निदेशक (वाणिज्य), मुख्य सतर्कता अधिकारी एवं अन्य अधिकारी गण एवं कर्मचारी उपस्थित रहे। अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक द्वारा सभी अधिकारीयों एवं कर्मचारीयो को मुख्य सतर्कता आयोग द्वारा प्रेषित सतर्कता शपथ दिलाई गई। साथ ही मॉयल के सतर्कता विभाग द्वारा प्रकाशित वार्षिक पत्रिका ''शुचिता'' के 11 वें संस्करण का लोकापर्णन किया गया। सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान सतर्कता विषय पर विभिन्न कार्यक्रमो का आयोजन किया गया। स्लोगन, कविता, क्विज, निबंध एवं भाषण के माध्यम से प्रतियोगीयों ने कार्यक्रम मे सम्मिलित होकर अपने विचार रखे। प्रतियोगिताओं के चयनित प्रतियोगियों को दिनांक 05.11.2022 को आयोजित पुरस्कार समारोह में पुरस्कार वितरण किया गया। सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन मॉयल मुख्यालय के अलावा सभी खानो में भी किया गया।

आज़ादी का अमृत महोत्सव

मॉयल मुख्यालय में आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर एक शाम शहींदो के नाम पर काव्य गोष्ठी का आयोजन

मॉयल लिमिटेड, मुख्यालय नागपुर में दिनांक **15** दिसम्बर **2022** को आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत एक शाम शहीदों के नाम विषय पर काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया। काव्य गोष्ठी में राजधानी दिल्ली से आमंत्रित कवि गजेन्द्र सोलंकी, मोहन मुन्तजिर, राधाकांत पाण्डेय एवं उपेन्द्र पाण्डेय ने काव्य पाठ्य का वाचन किया।

गजेन्द्र सोलंकी ने हिन्दी भाषा के बारे में कविता के माध्यम से अपने ओज पूर्ण विचार व्यक्त किये एवं कार्यक्रम के आयोजन हेतु राजभाषा विभाग का धन्यवाद किया। राधाकांत पाण्डेय ने मातृभूमि एवं देशप्रेम के उपर ओजपूर्ण कविता प्रस्तुत की साथ ही नारी शक्ति एवं देश की बेटियो को समर्पित कुछ पक्तिंया पढी। इसी क्रम में उपेन्द्र पाण्डेय ने गलवान के बलवान शीर्षक पर स्वयं के द्वारा रचित काव्य का वाचन किया एवं देश सेवा में समर्पित जवानो की हौसला अफजाही की एवं सदन को अपने ओजपूर्ण विचारों से मंत्रमुग्ध कर दिया। मनोज मुन्तजिर ने देश प्रेम से सराबोर हमारा हिन्दुस्तान बढैया विषय बहुत ही सुन्दर एवं रूचि कर गीत प्रस्तुत किया। काव्य गोष्ठी में उपस्थित सभी श्रोताओ ने कार्यक्रम का बहुत ही तल्लीनता से आनंद उठाया एवं अपने तालीयों के माध्यम से कार्यक्रम की सफलता का आभास कराया।

विश्व हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में कार्यशाला का आयोजन

विश्व हिन्दी दिवस के अवसर पर मॉयल मुख्यालय में ''राजभाषा से राष्ट्रभाषा की ओर अग्रसर होती हिन्दी'' विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया । कार्यशाला में मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. सूर्यप्रकाश दिक्षित सम्मिलित हुयें। प्रो. सूर्यप्रकाश दिक्षित जी भारत सरकार के अनेक मंत्रालय मे हिन्दी सलाहकार समिति के सदस्य रह चुके है एवं लखनऊ विश्वविद्यालय मे प्राध्यापक के रुप में अपनी सेवायें दिये है।

कार्यशाला में उन्होने उपरोक्त विषय पर अपने अमूल्य विचारो से अवगत कराया। सर्वप्रथम हिन्दी भाषा से संबधित दिवस जैसे राजभाषा दिवस, विश्व हिन्दी दिवस एवं मातृभाषा दिवस के बारे महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की। साथ ही नई शिक्षा नीति **2020** में माध्यमिक स्तर पर अनिवार्य एवं उच्च स्तर पर यथासंभव हिन्दी भाषा के उपयोग के बारे मे बताया। भाषा के बारे में विस्तृत से जानकारी प्रदान की एवं अनुवाद की उपयोगिता के बारे में अपने विचार व्यक्त किये।

नराकास परिचय

नगर राजभाषा कार्यान्वय समितियों (नराकास) की वर्तमान व्यवस्था

1. "नराकास" का गठनः राजभाषा विभाग के दिनांक 22.11.1976 के का.ज्ञा.सं. 1/14011/12/76-रा.भा.(का-1) के अनुसार देश के उन सभी नगरों में जहां केंद्रीय सरकार के 10 या इससे अधिक कार्यालय हों, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया जा सकता है। समिति का गठन राजभाषा विभाग के क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालयों से प्राप्त प्रस्तावों के आधार पर भारत सरकार के सचिव (राजभाषा) की अनुमति से किया जाता है।

2. अध्यक्षताः इन समितियों की अध्यक्षता नगर विशेष में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि के वरिष्ठतम अधिकारियों में से किसी एक के द्वारा की जाती है। अध्यक्ष को राजभाषा विभाग द्वारा नामित किया जाता है। नामित किए जाने से पूर्व प्रस्तावित अध्यक्ष से समिति की अध्यक्षता के संबंध में लिखित सहमति प्राप्त की जाती है।

3.सदस्यताः नगर में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालय/उपक्रम/बैंक आदि अनिवार्य रूप से इस समिति के सदस्य होते हैं। उनके वरिष्ठतम अधिकारियों (प्रशासनिक प्रधानों) से यह अपेक्षा की जाती है कि वे समिति की बैठकों में नियमित रूप से भाग लें।

4. सदस्य-सचिवः समिति के सचिवालय के संचालन के लिए समिति के अध्यक्ष द्वारा अपने कार्यालय से अथवा किसी सदस्य कार्यालय से एक हिंदी विशेषज्ञ को उसकी सहमति से समिति का सदस्य-सचिव मनोनीत किया जाता है। अध्यक्ष की अनुमति से समिति के कार्यकलाप सदस्य-सचिव द्वारा किए जाते हैं।

5. बैठकें : इन समितियों की वर्ष में दो बैठकें आयोजित की जाती हैं। प्रत्येक समिति की बैठकें आयोजित करने के लिए राजभाषा विभाग द्वारा एक कैलेंडर रखा जाता है जिसमें प्रत्येक समिति की बैठक हेतु एक निश्चित महीना निर्धारित किया जाता है। इन बैठकों के आयोजन संबंधी सूचना समिति के गठन के समय दी जाती है और निर्धारित महीनों में समिति को अपनी बैठकें करनी होती हैं।

6. प्रतिनिधित्व : इन समितियों की बैठकों में नगर विशेष में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों/उपक्रमों/ बैंकों आदि के प्रशासनिक प्रधान भाग लेते हैं। राजभाषा विभाग (मुख्यालय) एवं इसके क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय के अधिकारी भी इन बैठकों में राजभाषा विभाग का प्रतिनिधित्व करते हैं। नगर स्थित केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद की शाखाओं में से किसी एक प्रतिनिधि एवं हिंदी शिक्षण योजना के किसी एक अधिकारी को भी बैठक में आमंत्रित किया जाता है।

7. उद्देश्य : केंद्रीय सरकार के देश भर में फैले हुए कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि में राजभाषा के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने और राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के मार्ग में आ रही कठिनाइयों को दूर करने के लिए एक संयुक्त मंच की आवश्यकता महसूस की गई ताकि वे मिल बैठकर सभी कार्यालय/उपक्रम/बैंक आदि चर्चा कर सकें। फलत: नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के गठन का निर्णय लिया गया। इन समितियों के गठन का प्रमुख उद्देश्य केंद्रीय सरकार के कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की समीक्षा करना, इसे बढ़ावा देना और इसके मार्ग में आई कठिनाइयों को दूर करना है।

राजेश श्रीवास्तव
उपनिदेशक, राजभाषा विभाग,
गृह मंत्रालय, नई दिल्ली

शहिद

कारगिल में पाकिस्तान ने दो भारतीय मिग विमान मार गिराए, भारत का भी धैर्य टूटा, जबरदस्त संघर्ष शुरू। समाचारों की पहली हैडलाइन सुनते ही सारे घर में सन्नाटा छा गया। चौधरी साहब को अपने कानों पर यकीन नहीं हुआ। रणवीर की माँ तो जैसे पत्थर की मूरत बन गई। कनक का दिल जैसे अचानक बिजली की कड़क से लरज गया। घंटा बीतते बीतते खबर आग की तरह फैल गई और सभी अड़ोसी-पड़ोसी चौधरी साहब के घर के आसपास इकट्ठा होना शुरू हो गए। फुस फुसाहटें मुखर हो उठीं।

अरे अपना रणवीर भी तो कारगिल में ही है ना?
उसे भी तो फ्रंट पर भेजा गया होगा ना?
अपने गाँव की शान है हमारा मेजर रणवीर प्रताप सिंह।
अरे होगा क्यों नहीं, आखिर अपने बहादुर रिटायर्ड लांस नायक बाप का असली बेटा जो ठहरा।

चर्चाओं, कयासों, अनुमानों और दुआओं के इस दौर के लिए बीच रणवीर की माँ पत्थर की मूर्ति की तरह टेलीविजन को अपलक निहार रही थी। समाचारों के बाद वंदेमातरम की गूंज लोगों के दिलों में जोश और उत्साह भर रही थी, लेकिन एक माँ का दिल बैठा जा रहा था। एक पत्नी का सुहाग दाँव पर लगा था। चौधरी साहब टी.वी. से ज्यादा टेलीफोन पर नजरें गड़ाए थे। उन्हें कदाचित मालूम था कि युद्ध के परिणाम की घोषणा तो टी.वी. करेगा लेकिन उनके परिवार की जंग का फैसला तो टेलीफोन ही करेगा।

कनक मुँह में पल्ला ठूंसे भाग कर अपने कमरे में आई और रणवीर की तस्वीर को अपने सीने से लगा लिया। वह पागलों की तरह उसे निहारे जा रही थी। एक युद्ध करगिल में चल रहा था और दूसरा उसके दिल में। आशंकाओं के विस्फोट से सांवले चेहरे की ललना मांग थरथरा रही थी। रगों की बढ़ती धड़कनें चूड़ियों की खनक को दहला-दहला जातीं। डर बड़ा ज़ालिम होता है, अच्छा भला आदमी दम तोड़ दे। एक अनकहा और अनदेखा युद्ध जो इस वक्त आशंकाओं के मैदान में चल रहा था, कारगिल में चल रहे युद्ध से कहीं ज़्यादा भयानक और वीभत्स था।

युद्ध शुरू हो गया था। इसके साथ ही शुरू हुआ- आशंकाओं, सिहरनों, दुस्वप्नों और दुआओं का दौर। टेलीविजन पर गरजती तोपों की आवाजें सुनाई पड़तीं तो दिल मेमने-सा थरथराने लगता। घबराई निगाहें हर रोज शहीद होने वाले सैनिकों के नामों पर जाती और रणवीर का नाम न पाकर उसमें फिर से चमक लौट आती। लेकिन आशंकित मन पत्थर खाए ताल-सा हिलता रहता। युद्ध शुरू होने के बाद के सात दिन सात जन्मों की तरह गुज़रे पर आठवाँ दिन खुशियों का उपहार लाया। रणवीर के दो पत्र पहुँचे तो जैसे सारा घर मारे खुशी के पागल हो गया। पहला पत्र माँ के नाम था-

माँ,
चरण स्पर्श।
माँ तुम कैसी हो, बाबू जी के क्या हालचाल हैं? हमारे बारे में तो तुम टी.वी. पर सुन ही चुकी होंगी। इम्तहान का वक्त आ गया है। मेरे हथियार और जोश पड़े पड़े ज़ंग खा रहे थे लेकिन अब दुश्मनों की पीठ होगी और मेरा निशाना। युद्धभूमि में दुश्मनों की ख़बर लेने जा रहा हूँ। पर फ्रंट पर अकेला नहीं लड़ूँगा, आप सब की दुआएं और

आशीर्वाद मेरे साथ लड़ेंगे। माँ, तुम चिंता मत करना। तुम्हारा बेटा सौ को मार कर ही मरेगा। लेकिन ईश्वर ने चाहा तो मरने की नौबत शायद न आए क्योंकि मुझे अपने से ज़्यादा तेरे भगवान पर भरोसा है। तेरा मुरलीवाला तेरा विश्वास नहीं तोड़ेगा। बाबूजी से कहना कि उनका बेटा उनका सिर नीचा नहीं होने देगा। उनका सिर हमेशा गर्व से ऊंचा रहेगा–हमारे तिरंगे की ही तरह। ईश्वर ने चाहा तो आपका बेटा जल्दी ही आपके पास होगा।

दूसरा ख़त कनक के नाम था।

प्रिय कनक,
कैसी हो। मेरे हिस्से का प्यार बचाए रखना। लौटने पर अगला पिछला सारा हिसाब लूंगा लेकिन हो सकता है कि ये मेरा आखिरी ख़त हो और शायद ख़त के माध्यम से ही तुम्हारी–मेरी आखिरी मुलाकात। मुझे युद्धभूमि में जाने का आदेश मिला है। दुश्मनों से घिरे इलाके में जा रहा हूँ लेकिन तुम घबराना मत। तुम्हारे बाहुपाश का कवच, माँ के आँचल की ढाल और पिताजी के हौंसले की तलवार मेरे साथ है। आसानी से मरूंगा नहीं और अगर मारा भी गया तो तुम्हारी साँसों और तुम्हारी धड़कनों में हमेशा जिंदा रहूँगा। वैसे भी अपने अजन्मे बच्चे के रूप में अपनी निशानी तुम्हारी कोख में छोड़कर आया हूँ, उसे संभाल कर रखना, मेरे बाद तुम्हारे बहुत काम आएगी। बहुत मन था कि कम–से–कम एक बार तुमसे मिलकर जाता। जी भर कर तुम्हें प्यार करता और अपने होने वाले बच्चे को दुलार के कुछ स्पर्श दे जाता। मगर ज़िंदगी में सब कुछ मनचाहा नहीं होता। माँ भवानी ने चाहा तो फिर मिलेंगे। फिलहाल विदा। बहुत बहुत प्यार के साथ।

सिर्फ तुम्हारा रणवीर।

कनक ने छलकती आँखों और धड़कती छाती से लगाकर ख़त को चूम लिया। दो पल को उसकी आँखें शून्य में टँग गईं और मन पीछे भागने लगा। उसे याद आया अपना ही वो ख़त जो उसने चंद महीनों पहले रणवीर को लिखा था और घर आने पर रणवीर अपनी अमानत के रूप में ख़त को उसी के पास छोड़ गया था। तन्हाई में प्रियतम का पत्र प्रिय होता है। वैसे भी आदमी की शख्सियत या तो बंद कमरे में खुलती है या ख़त में। ख़त अपने किसी बहुत करीबी का हो तो दिल लगाने का उससे बढ़िया माध्यम और कोई नहीं। ख़त अपना ही हो तो मज़ा दूसरे किस्म का होता है। कनक ने फौरन अल्मारी खोली और ख़त निकाल लिया। वह उसे इस तरह पढ़ने लगी मानों ये अभी–अभी मिले रणवीर के ख़त का ही जवाब हो।

प्यारे राजा,

कहो कैसे हो। तुम यहाँ नहीं हो मगर जैसे सिर्फ तुम ही यहाँ हो–हर पल, हर घड़ी और हर जगह। जब तुम नहीं होते तो मेरे पास तुम्हारे सिवा और कुछ नहीं होता। शादी के बाद, तुम्हारे साल दुश्मनों के और मेरे साल तुम्हारे इंतज़ार में गुज़रे हैं। मगर इस दर्द को कोई नहीं समझता। दर्द समझने के लिए भोगना ज़रूरी है क्योंकि सिर्फ देखने से वह टीस नहीं होती जो अंदर तक रगों को सिहरा जाए। कभी मेरी इस टीस को समझ सको तो सब कुछ छोड़छाड़ कर आ जाना। बहुत ज़मीन पड़ी है–पेट तो भर ही जाएगा। वैसे समस्या पेट की नहीं दिल की है। तुम जब भी आते हो और भी तड़पाकर चले जाते हो। हो सके तो इस तड़प को हमेशा के लिए मिटा दो। मेरा सर्वस्व तुम्हारी प्रतीक्षा में है।

तुम्हारी और सिर्फ तुम्हारी
कनक

अपना ख़त खुद ही पढ़ते–पढ़ते कनक बिलख उठी। मोती की लड़ियों की तरह आँसू गालों पर ढुलकने लगे। दिल में रणवीर की मुहब्बत थी तो कानों में तोपों की गरज। उसका ख़त मिला तो कुछ तसल्ली हुई लेकिन हर दिन लड़ाई के समाचार देख अज्ञात भय से उसका कलेजा हलक में आ जाता। एक और सप्ताह बीत गया। घर में सभी शंकित और आशंकित–से अपनी आँखें और कान टी.वी. या रेडियो पर गड़ाए रहते। आखिरकार चिर प्रतीक्षित ख़बर आई–मेजर रणवीर प्रताप सिंह के नेतृत्व में भारतीय सेना की बहादुर टुकड़ी ने एक और चोटी दुश्मनों के कब्जे से मुक्त कराई। दुश्मनों के पलटवार में मेजर भी घायल लेकिन दुश्मनों का पूरी तरह सफाया करने से पहले उन्होंने लौटने से इंकार किया। चौधरी साहब का सीना फ़क्र से चौड़ा हो गया, माँ की बूढ़ी छातियों में मानों ममत्व का दूध उतर आया और कनक तो जैसे बिना कुछ करे ही रण बांकुरी बन गई।

वहाँ दुश्मनों से और यहाँ ख़ुद से जंग जारी थी। एक तरफ गोलियों और तोपों की थरथराहट थी तो दूसरी तरफ दुआओं, मन्नतों और आशीर्वादों की झड़ियाँ। जैसे जैसे दिन बीतते जाते, दिल के किसी कोने में बैठा दर्द उचककर चेहरे पर आ जाता और तब पथराई आँखों में जैसे कोई स्रोत–सा

फूट पड़ता। आज एक महीना होने को आया पर मेजर रणवीर के बारे में कोई ख़बर न थी। सिर्फ इतनी सी सूचना मिली कि एक और चोटी पर हमले के समय मेजर अपनी टुकड़ी से बिछुड़ गए। उनका और उनके तीन-चार साथियों का कही कोई अता पता नहीं था। वे अपनी टुकड़ी से क्या अलग हुए, उसके बाद जैसे लापता ही हो गए। न वे वापस आए और न ही उनकी लाशें मिलीं। किसी को पता नहीं था कि वे जीवित है या मृत लेकिन उनके लापता होने से एक आशंका दृढ़ होने लगी थी कि ये लोग शायद पाकिस्तानी सैनिकों के हाथ पड़ गए हैं। इधर पूरे परिवार में एक अजीब सी मनहूसियत छा गई थी।

माता-पिता सकते में थे कि लाडले के लौटने की प्रतीक्षा में दिल को तसल्ली दें या उसके न होने का मातम मनाएँ। कनक सिंदूर की डिबिया उठाती तो थरथरा जाती-इसे मांग में भरूं या मांग से अलग करूं।

धैर्य और सब्र के अलावा अब और कोई चारा न था। लेकिन सब्र की भी एक सीमा होती है। इसके बाद न मैने कहा मानता है और न धड़कन। न आँसू कोई दलील सुनते हैं, न सिसकियाँ। सब्र के बाँध में जैसे दरार पड़ जाती है और दर्द चुपके से टपक पड़ता है। कनक की आँखों से भी आँसू लगातार रिसने लगे थे। सब्र के साथ यकीन भी डगमगा गया था। उसका जी चाहता कि कोई अपनेपन से भरा कांधा मिले तो सिर टिका कर जी भर के रो ले और मन के भीतर जमा सारा दर्द आँखों से बाहर उडेल दे। घर में खुलकर बात करने के लिए या तो उसकी तन्हाइयाँ है या दिल में बसी रणवीर की चुहलबाजियाँ या फिर बैडरूम की बेरौनक दीवारें। लेकिन ये सब केवल सुनते हैं, दर्द में शामिल नहीं होते, तसल्ली नहीं देते।

मन बहुत उचाट हुआ तो उसने अपने बचपन की सहेली रचना को फोन करके बुला लिया। रचना अगले ही दिन दिल्ली से चली आई। रचना आई तो कनक को दिल खोल कर रोने का मौका मिल गया-अब तू ही बता रचना, मैं खुद को सधवा कहूँ या विधवा। वो दुश्मनों की गिरफ्त में हैं-वो भी ऐसे दुश्मन की गिरफ्त में जो रहम नहीं जानता। पता नहीं वो ज़िंदा भी है या नहीं। ज़िंदा हैं तो जाने किस हाल में हैं। एक आस जरूर ज़िंदा है जो मुझे सुहागिन कहती है। लेकिन भीतर कहीं एक बेरहम डर है जो मेरी बिंदिया को कंपकंपाता है और मेरी मांग को पथरीला बना देता है। जाने उन जुल्मियों ने उनके साथ क्या किया होगा। मुझे नहीं मालूम कि मैं किस स्थिति में जिऊं। दो टुकड़ों में जीना बड़ा मुश्किल है रचना। सब कुछ मर गया है, ज़िंदा है तो बस एक आस और हल्का-सा विश्वास।

रचना उसका दिल रखने के अलावा और क्या कर सकती थी। कनक का मन थोड़ा हल्का हुआ तो वह पुरानी स्मृतियों में डूब गई। रणवीर उसकी रगों में उतर आया। तू जानती है रचना इनकी आँखे इस कदर नशीली हैं कि जब मेरे पापा ने इन्हें पहली बार देखा तो सोचा कि बड़ा पियक्कड़ किस्म का आदमी है। शादी के बाद मैंने जाना कि ये पीते तो हैं मगर आँखों से, इसीलिए सुरूर इतना गहरा है। मैं उन आँखों को करोड़ों में पहचान सकती हूँ। उनकी अनामिका अंगुली उनकी निगाहों की तरह ही टेढ़ी है पर खूबसूरत सांचे में ढली हुई। उनकी नाक ऐसी तीखी है कि भीतर तक गड़ जाए। कनक अपनी धुन में बोले जा रही थी, उनकी नाभि के ठीक नीचे लहसुन का निशान तो ऐसे लगता है जैसे नज़र से बचाने के लिए भगवान ने डिठौना लगा दिया हो। तू जानती है रचना, उनकी अंगुलियाँ इतनी बदमाश हैं कि बदन को जहाँ छू दें, वहीं का तार-तार दहला दें। उन अंगुलियों में बला का करंट है। जिसको पूरा गिरफ्त में ले लें तो समझों जैसे इलेक्ट्रिक शॉक लग गया। उनके पाँवों की अंगुलियाँ इस प्रकार कदर खूबसूरती से गढ़ी गई हैं कि पाँव छूने का नहीं, चूमने का मन होता है।

कई दिन तक कनक कल्पना के पंखों पर बैठी स्मृतियों की उड़ान भरती रही मगर तभी जैसे किसी ने उड़ते पंछी के पर कतर डाले और वह फड़फड़ाती हुई नीचे आ गिरी। आकाशवाणी पर सुबह-सुबह ख़बर प्रसारित हुई कि पाकिस्तानी सैनिकों ने कुछ भारतीय लड़ाकों को ज़िंदा पकड़ लिया है और उनमें मेजर रणवीर प्रताप सिंह भी शामिल हैं। ख़बर सुनते ही सारे घर में हड़कंप मच गया। माँ गश खाकर गिर पड़ी, कनक फफक-फफक कर रोई और चौधरी साहब जैसे पत्थर हो गए। ख़बरों के आने का सिलसिला जारी था। सरकार ने बंदी बनाए गए सैनिकों को लौटाने की अपील की और शहीद हुए उन रणबांकुरो के शव लौटाने का पाकिस्तानी सेना से आग्रह किया जो उसके कब्जे में थे। लेकिन पाकिस्तान ने किसी के भी बंदी बनाए जाने और कुछ शवों के अपने कब्जे में होने की खबरों का खंडन किया।

ख़बरें जारी थीं-हर रोज़ कुछ नई ख़बरें। सरकार द्वारा बंदी बनाए गए भारतीय सैनिकों को छुड़ाने की भरपूर कोशिशें,

पाकिस्तान का पहले की तरह इंकार, आरोप-प्रत्यारोप, कुछ और मारे, कुछ और मरे लेकिन चौधरी साहब के परिवार को पता नहीं था कि वह मरा है या ज़िंदा है। कनक को मालूम नहीं था कि वह सुहागिन है या अभागिन। माँ को ज्ञात नहीं था कि उसकी कोख उजड़ी है या गौरवान्वित हुई है। चौधरी साहब को भी समझ नहीं आ रहा था कि बेटे की स्मृतियों का सत्कार करें या अंतिम संस्कार। पर आखिरकार इंतज़ार का तिलिस्म टूटा, टेलीफोन की घंटी बजी। उन्हें दिल्ली के सैनिक अस्पताल बुलाया गया था सिर्फ ये पहचान करने के लिए कि पाकिस्तान द्वारा सौंपे गए कुछ भारतीय सिपाहियों की लाशों में मेजर रणवीर भी है या नहीं।

किसी तरह खुद को संभाले चौधरी साहब, रणवीर की माँ और कनक दिल्ली पहुंचे। कनक के मन में रणवीर की नशीली आँखें, तराशी हुई नाक, सनसनाती अंगुलियाँ और उन्मुक्त हँसी गूंज रही थी। उसे लगा कि धड़कते दिल और लरजती मांग ने शायद सही कहा था। लाशें देखीं तो सबके सब बुरी तरह हिल गए। पाकिस्तानी दरिन्दों की इन्तहा कर दी थी। फौजियों की आँखें निकाल ली गईं थीं। हाथ और पाँव की सारी अंगुलियों के नाखून उखड़े हुए थे। नाक को चीर दिया गया था। गुप्तांग क्षत-विक्षत थे। वे सब अब सिर्फ भयानक और अपरिचित लाशें थीं जिसे रचने वाला विधाता भी शायद न पहचान पाता। ऐसे में कौन और कैसे पहचाने रणवीर को। सारी निशानियाँ दुश्मन ने अपने पास रख लीं थीं लेकिन नाभि के नीचे का डिठौना माँ और पत्नी की नज़र से न बच सका। जवानों की ऐसी दुर्दशा कि पत्थर का कलेजा भी काँप जाए। किस कदर तड़पा-तड़पा के मारा होगा बेदर्दियों ने भारत माँ के इन लालों को। कितनी पीड़ा हुई होगी जब सिगरेटों से बदन दागे गए होंगे। कैसी कलेजा चीरने वाली चीखें आसमान को दहला रही होंगी जब अंगुलियों के नाखून उखाड़े गए होंगे। कितना हलक फाड़ कर तड़पे होंगे जब शरीर के नाज़ुक अंग चीरे गए होंगे। कोई जानवर को भी इतनी बुरी तरह हलाल नहीं करता। कनक सोचती जाती थी और छाती पीटती जाती थी। माँ का कलेजा पहले ही फट गया था। वो अपने बेटे की लाश के ऊपर गिरकर ही बेहोश हो गयी। बाप की आँखों में खून उतर आया था और दिल में चिंगारियाँ भड़क रहीं थी।

रणवीर की अर्थी के साथ मानों पूरा शहर उमड़ पड़ा। बेटे के साथ अपने सपनों और कनक के भविष्य को फूंक कर चौधरी परिवार घर से श्मशान में लौट आया। भारतीय सेना एक के बाद एक चोटी को दुश्मन से मुक्त कराती जा रही थी। देश के चेहरे पर रौनक लौट रही थी लेकिन यहाँ हर चेहरे से मुस्कान हमेशा के लिए निर्वासित हो गई थी। खुशियों ने सन्यास ले लिया था। एक चौकी जीतने वाला अपना पूरा जीवन हार गया था। पर सरकार ने अपने बहादुर शहीदों को बहुत ज्यादा इज़्ज़त और सम्मान दिया। शहीदों के परिवारों को आर्थिक सहायता पहुंचाने में बड़ी सदाशयता और फुर्ती दिखाई। अधिकारी लोग रणवीर की विधवा को सहायता राशि देने पहुँचे तो कनक ने रोकर कहा, रुपया पेट तो भर सकता है साहब, ज़ख्म नहीं। मुझे रुपये नहीं मेरा पति चाहिए।

हम लोगों की आपके साथ पूरी सहानुभूति है और आप की सहायता के लिए ही ये आर्थिक मदद दी जा रही है, आप इसे स्वीकार कीजिए।

इस पर चौधरी साहब ने बिलखते हुए कहा, लोग सहानुभूति देते है और सरकार पैसा। बेटा मर के अमर हो गया मगर जो जीते जी मरे हैं, वो किस स्वर्ग में जाएंगे साहब। जिसके कंधों पर जाना था, उसे कंधों पर ले जाना पड़ा। है आपके पास इस दर्द की कोई दवा? अधिकारी सन्न थे मगर चौधरी साहब का दर्द मचल रहा था, लोग कहते हैं कि मेजर रणवीर प्रताप सिंह मारा गया लेकिन झूठ कहते हैं लोग। अकेला मेजर रणवीर प्रताप नहीं मरा है। हमारे जिगर का टुकड़ा और हमारे बुढ़ापे का सहारा मरा है। मेरी मासूम बहू का पति मरा है। उसकी मांग की ललाई और हसरतें मरी हैं। वह बच्चा जो उसके गर्भ में पल रहा है उसे तो यह भी पता नहीं है कि किस कसूर की सजा में उसे जन्म लेने से पहले ही अनाथ कर दिया गया है। उस अबोध बच्चे का बाप मरा है। सिर्फ एक मेजर रणवीर नहीं साहब, उसके साथ पूरा एक परिवार मरा है। क्या आपके रुपए इनमें से किसी एक को भी ज़िंदा कर सकते हैं?

सिर झुकाए एक मजबूर खामोशी सब के चेहरों पर पसर गई थी। कुछ मुखर था तो सिर्फ सिसकियाँ।

डॉ. प्रणव शास्त्री
सदस्य हिन्दी सलाहकार समिति
इस्पात मंत्रालय, भारत सरकार

सुभद्रा कुमारी चौहान के काव्य में राष्ट्रीय चेतना

राष्ट्र के प्रति प्रेम भावना ही 'राष्ट्रीय भावना' या 'राष्ट्रीयता' कही जाती है। राष्ट्रीयता या राष्ट्रीय भावना जब तक राष्ट्रीय चेतना नहीं बनती तब तक उसमें सम्पूर्णता निर्धारित नहीं होती क्योंकि भावना में श्रद्धा, निष्ठा तथा भक्ति तो होती है परन्तु कभी-कभी ज्ञान, विवेक तथा जाग्रति का अभाव रहता है। अत: भावना का एक और अगला पड़ाव सामने आता है 'चेतना के रूप में', जिसमें श्रद्धा, निष्ठा और भक्ति के साथ ज्ञान, विवेक और जाग्रति का समन्वय होता है। इस प्रकार राष्ट्रीयता या राष्ट्रीय भावना की आगामी चौतन्य यात्रा का नाम ही 'राष्ट्रीय चेतना' है। किसी भी राष्ट्र का अस्तित्व उस राष्ट्र की चेतना शक्ति पर प्रतिष्ठित होता है। इसी के उत्थान और पतन के साथ राष्ट्र का उत्थान और पतन होता है। वस्तुत: राष्ट्रीय चेतना किसी भी 'राष्ट्र' की आत्मा होती है, यह मानव की एक मूलभूत आन्तरिक चेतना है, एक प्रकार की साहचर्य भावना है, जिसका विकास एकानुभूति रखने वाले जनसमुदाय में होता रहता है। राष्ट्र के साहचर्य भावों के साथ प्रस्फुटित होने वाली यह 'चेतना' ही 'राष्ट्रीय चेतना' बनती है। यह राष्ट्रीयता का सही, सम्पूर्ण और सुयोग्य स्वरूप है। राष्ट्रीय चेतना राष्ट्र की जननी है, उसकी धारणा शक्ति है। वह मानव मन में प्रादुर्भूत एक अत्यंत प्रबल भावना है, जिसका विकास उत्तरोत्तर होता रहता है।

राष्ट्रीयता का जन्म देशभक्ति के आधार पर होता है और हमारे देश के साहित्यकारों एवं कवियों ने माता तथा मातृभूमि का वर्णन केवल इसीलिए ही नहीं किया है कि माता जन्मदात्री है और मातृभूमि पर हम निवास करते हैं, अपितु इसलिए भी किया है क्योंकि इन दोनों का संबंध हमारे जीवन की विविध प्रवृत्तियों एवं धारणाओं से भी हैं।

सुभद्राकुमारी चौहान के विषय में कहा जा सकता है कि उनका रचना संसार देशभक्ति की भावना से रंगा हुआ है और उनकी रचनाओं में देश की मिट्टी की महक को अनुभव किया जा सकता है।

सुभद्रा कुमारी चौहान हिंदी की सुप्रसिद्ध कवयित्री और लेखिका थीं। उनका जन्म 16 अगस्त 1904 को इलाहाबाद में हुआ, जबकि 15 फरवरी 1948 को मात्र 43 वर्ष की उम्र में उनका निधन हो गया। उनके दो

कविता संग्रह तथा तीन कथा संग्रह प्रकाशित हुए, पर उनकी प्रसिद्धि 'झांसी की रानी' कविता के कारण है। सुभद्रा जी राष्ट्रीय चेतना की एक सजग कवयित्री रहीं, किंतु उन्होंने स्वाधीनता संग्राम में अनेक बार जेल यातनाएं सहने के पश्चात अपनी अनुभूतियों को कहानी में भी व्यक्त किया। वातावरण चित्रण-प्रधान शैली की भाषा सरल तथा काव्यात्मक है। इस कारण उनकी रचना की सादगी हृदयग्राही है। एक कविता में वह लिखती हैं : 'चमक उठी सन् सत्तावन में, वह तलवार पुरानी थी, बुंदेले हर बोलों के मुंह, हमने सुनी कहानी थी, खूब लड़ी मरदानी, वह तो झांसी वाली रानी थी।'

वीर रस से ओत-प्रोत इन पंक्तियों की रचयिता सुभद्रा कुमारी चौहान को 'राष्ट्रीय वसंत की प्रथम कोकिला' का खिताब दिया गया था। यह वह कविता है जो जन-जन का कंठहार बनी। कविता में भाषा का ऐसा ऋजु प्रवाह मिलता है कि वह बालकों-किशोरों को सहज ही कंठस्थ हो जाती है। कथनी-करनी की समानता सुभद्रा जी के व्यक्तित्व का प्रमुख अंग है। उनकी रचनाएं सुनकर मरणासन्न व्यक्ति भी ऊर्जा से भर सकता है। ऐसा नहीं कि कविता केवल सामान्य जन के लिए ग्राह्य है, यदि काव्य-रसिक उसमें काव्यत्व खोजना चाहें तो वह भी है 'हुई वीरता की वैभव के साथ सगाई झांसी में'।

लक्ष्मीबाई की वीरता का राजमहलों की समृद्धि में आना जैसा एक मणिकांचन योग था, कदाचित उसके लिए 'वीरता और वैभव की सगाई' से उपयुक्त प्रयोग दूसरा नहीं हो सकता था। स्वतंत्रता संग्राम के समय जो अगणित कविताएं लिखी गईं, उनमें इस कविता और माखनलाल चतुर्वेदी की पुष्प की अभिलाषा का अनुपम स्थान है। सुभद्रा जी का नाम मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा नवीन की यशस्वी परंपरा में आदर के साथ लिया जाता है। वह बीसवीं शताब्दी की सर्वाधिक यशस्वी और प्रसिद्ध कवयित्रियों में अग्रणी हैं। उनका जन्म नागपंचमी के दिन 16 अगस्त 1904 को इलाहाबाद के पास निहालपुर गांव में हुआ था। उनके पिता का नाम ठाकुर रामनाथ सिंह था। सुभद्रा कुमारी की काव्य प्रतिभा बचपन से ही सामने आ गई थी। उनका विद्यार्थी जीवन प्रयाग में ही बीता। 1913 में नौ वर्ष की आयु में सुभद्रा की पहली कविता प्रयाग से निकलने वाली पत्रिका 'मर्यादा' में प्रकाशित हुई थी। सुभद्रा और महादेवी वर्मा दोनों बचपन की सहेलियां थीं। दोनों ने एक-दूसरे की कीर्ति से सुख पाया। 1919 ई. में उनका विवाह ठाकुर लक्ष्मण सिंह से हुआ। विवाह के पश्चात वह जबलपुर में रहने लगीं।

सुभद्रा कुमारी चौहान अपने नाटककार पति लक्ष्मण सिंह के साथ शादी के डेढ़ वर्ष के होते ही सत्याग्रह में शामिल हो गईं और उन्होंने जेलों में ही जीवन के अनेक महत्त्वपूर्ण वर्ष गुजारे। गृहस्थी और नन्हे-नन्हे बच्चों का जीवन संवारते हुए उन्होंने समाज और राजनीति की सेवा की। देश के लिए कर्तव्य और समाज की जिम्मेदारी संभालते हुए उन्होंने व्यक्तिगत स्वार्थ की बलि चढ़ा दी।

सुभद्रा जी ने बहुत पहले अपनी कविताओं में भारतीय संस्कृति के प्राण तत्वों, धर्मनिरपेक्ष समाज का निर्माण और सांप्रदायिक सद्भाव का वातावरण बनाने के प्रयत्नों को रेखांकित कर दिया था। आज वह हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन हिंदी साहित्य तथा देश की आजादी के लिए योगदान के निमित उन्हें आज भी याद किया जाता है।

कवयित्री की कविता में राष्ट्रीय चेतना का विस्तृत रूप देखने को मिलता है। इनकी कविताओं में भारतीय संस्कृति में आस्था और प्राचीन इतिहास के गौरव परिलक्षित होता है। उनकी देशभक्ति की कविताओं ने जन-आंदोलन का काम किया, लोगों में जागृति फैलाई और देश की स्वाधीनता के लिए उत्साह जगाया है।

देशभक्ति की भावना अन्य दूसरी भावनाओं से उपर हुआ करती है। क्योंकि देश-परिवार, समाज, समुदाय आदि सभी से बड़ा होता है। सच्चा देशभक्त अपने देश के अतीत-वैभव एवं गौरव को बरकरार रखने के लिए अपने

प्राणों की आहुति दे देता है। भारत का इतिहास अतीत के गौरवशाली पृष्ठों से भरा हुआ है। क्योंकि यहाँ एक से बढ़कर एक दिग्गज देशभक्त कवि पैदा हुए हैं जिनमें प्रमुख मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, सुभद्रा कुमारी चौहान आदि रहे हैं। देशभक्त की भावना से ओत-प्रोत कविता 'झाँसी की रानी' की कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार है:-

''सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में भी आयी फिर से नयी जवानी थी,
गुमी हुई आजादी की कीमत सबने पहचानी थी,
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी,
चमक उठी सन् सतावन में
वह तलवार पुरानी थी।
बुन्देले हर बोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।''

देश प्रेम की भावना ही काव्यगत राष्ट्रीय चेतना का केन्द्र बिंदु है। यह राष्ट्रीय काव्य की प्रथम प्रमुख और महत्त्वपूर्ण विशेषता है। इसलिए देश प्रेम की भावना को राष्ट्रीय चेतना का मूलाधार समझा जाता है।

वहीं अतीत का गौरव-गान राष्ट्रीय चेतना को जाग्रत करने का एक महत्त्वपूर्ण आधार है। इनकी कविताओं में अतीत का गौरवगान अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में अभिव्यक्त हुआ है। इनके काव्य का ओजस्वी भाव देशवासियों में शत्रुओं को लोहे के चने चबाने की शक्ति और साहस भरता है। वह 'पुरस्कार कैसा' शीर्षक कविता में लिखती हैं:-

''इन बुन्देलों की झाँसी में
शस्त्रों बिना तार कैसा?
देश प्रेम की मतवाली को
जननी! पुस्कार कैसा?'

साथ ही वह बताती हैं कि देश की सोई हुई शक्ति को जाग्रत करने के लिए देश के अतीत अथवा वर्तमान के वीर पुरुषों के पराक्रम एवं महानता का वर्णन काव्य में प्रस्तुत किया जाना अत्यन्त प्रभावी सिद्ध होता है। इनके काव्य में यह प्रकृति यंत्र-तंत्र देखी जा सकती है। स्वतंत्रता संग्राम के महत्त्वपूर्ण स्तंभ माने जाने वाले गाँधी जी तथा तिलक को कवयित्री ने प्रमुखता के साथ याद किया है। क्योंकि उन्होंने आजादी की लड़ाई को नए आयाम दिये थे। गाँधी जी एवं तिलक का प्रभाव उनके काव्य में राष्ट्रीय चेतना बनकर प्रस्फुटित हुआ है:-

'तिलक, लाजपत, गाँधी जी भी
बंदी कितनी बार हुए।
जेल गये जनता ने पूजा।
संकट में अवतार हुए।।''

कवयित्री सुभद्राकुमारी चौहान की कविताओं में जाति-पाँति संबंधी विषमता को समाप्त करने की कामना से ओजस्वी वाणी में भावात्मक उद्घोष किया है शीर्षक 'प्रभु तुम मेरे मन की जानो' कविता में वह लिखती हैं:-

''मैं अछूत हूँ मन्दिर में आने का मुझको अधिकार नहीं है। किन्तु देवता यह न समझना तुम पर मेरा प्यार नहीं है।'"

यही इन पंक्तियों में दर्शाया गया है कि पुजारिन अटल भक्ति और दृढ़ता से खड़ी है। समाज की रूढ़ियाँ उसे रोकती हैं। वह आँसू बहाती है, किंतु अपने आराध्य के प्रति नत मस्तक है।

इनकी सभी कविताओं में लगभग राष्ट्रव्यापी स्वर मुखरित हुआ है। उन्होंने आजादी एवं स्वतंत्रता की तीव्र अभिलाषापूर्ण कविताओं का भी सृजन किया है। वीर स्तुति की इन पंक्तियों में उनके पावन मनोभाव को दर्शाया है:-

'इन कुटिया को महल समझना, हम बालक अज्ञानी।
पूजा को तैयार खड़े हैं, स्वागत ! आओ महारानी ।।

भक्ति भावना तथा अध्यात्म में एक ऐसी आत्मशक्ति है, जो 'स्व' से लेकर समष्टि तक में चैतन्यता भर देती है। अनिवार्यत: वह राष्ट्र की आत्मशक्ति है। जिस देश की आध्यात्मिक चेतना जितनी प्रबल और जाग्रत होती है, वह राष्ट्र उतना ही बलवान बनता है। साथ ही रचनाकार केवल भक्ति या अध्यात्मिक मार्ग पर आँख बंद कर नहीं चलता अपितु कर्म-पथ पर आँखे खोलकर चलता रहता है। जिसमें सदैव कर्मवीर की प्रेरणा होती है। कविता की राह से राष्ट्रीय चेतना को साथ लेते हुए कवि अध्यात्म की ओर आगे बढ़ता है। इस प्रकार कवयित्री की राष्ट्रीय चेतना आध्यात्मिक रंग में रंग गई है। देश प्रेम की भावना को उन्होंने आध्यात्मिक स्तर पर प्रतिष्ठित किया है,

यथा:-

''पापों के गढ़ टूट पड़ेंगे,
रहना तुम तैयार सखी!
विजय! हम-तुम मिल कर लेंगी
अपनी माँ का प्यार सखी।।"

सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता में अंग्रेजों द्वारा किए गए अत्याचार एवं भारतीय वीरों द्वारा उनके सशक्त जवाब को बुद्धिमता से प्रस्तुत किया गया है। उनकी कविता इसी इतिहास का प्रतिबिंब है। त्याग, बलिदान और समर्पण के भाव उनमें सर्वव्याप्त हैं। विद्रोह का स्वर भी इनकी कविताओं में देखने को मिलता है। अगर विद्रोह इनकी कविताओं का मूल स्वर है, तो बलिदान और समर्पण उनकी प्राण-ध्वनि है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि राष्ट्रीय चेतना का अर्थ एकता की भावना है, जो राष्ट्रीय बल, राष्ट्रीय सुरक्षा तथा अखण्डता का आधार है। राष्ट्रीय एकता और अखण्डता की भावना राष्ट्रीय चेतना का महान बल और अनिवार्य शर्त है। कवयित्री ने राखी के माध्यम से राष्ट्र की एकता और अखण्डता का वर्णन करते हुए लिखा है:-

''भैया कृष्ण! भेजती हूँ मैं
अपनी राखी, तुमको आज।
कई बार जिसको भेजा है
सजा सजा घर नूतन साज।।''

डॉ. रामकुमार वर्मा ने 'मुकुल' कविता संग्रह की भूमिका में स्पष्ट बताया है कि ''सुभद्रा कुमारी चौहान के काव्य में विविधता होते हुए भी उनकी कविताएँ राष्ट्रीय है''। क्योंकि उनका जीवन ही राष्ट्रीय भावमय है। सच्चे अनुभवों ने उनकी इन कविताओं को अधिक स्पष्ट और हृदयग्राही बना दिया है।

इन्होंने अपनी राष्ट्रीय कविताओं में वीर भाव के साथ ही साथ भावुकता भी इस प्रकार भर दी है कि उन कविताओं का मूल्य वस्तुत: देश के मूल्य के बराबर हो जाता है।''

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि सुभद्राकुमारी चौहान आधुनिक हिन्दी राष्ट्रीय काव्यधारा की महान कवयित्री है। हम देखते हैं कि कइयों के अन्दर एक ऐसी दृष्टि होती है, जो कलम की नोक पर आकर वीर रस का काव्य बन जाती है या वही दृष्टि राजनैतिक और सामाजिक आंदोलनों को जन्म देती है सचमुच ही वह दृष्टि सुभद्राकुमारी चौहान की लेखनी में भी थी।

आज़ादी का अमृत महोत्सव

दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय चेतना

डॉ. प्रणव शास्त्री
सदस्य हिन्दी सलाहकार समिति
इस्पात मंत्रालय, भारत सरकार

आधुनिक युग में हिन्दी काव्य में पौरुष का प्रतीक और राष्ट्र की आत्मा का गौरव गायक जिस कवि को माना गया है उसी का नाम 'रामधारी सिंह दिनकर' है। वाणी में ओज लेखनी में तेज और भाषा में अबाध प्रवाह उनके साहित्य में देखा जा सकता है। 'दिनकर' का जन्म बिहार के सिमिरिया घाट स्थान पर 30 सितम्बर 1908 को हुआ। मुंगेर जिले में यह छोटा सा ग्राम है। इनके पिता का नाम श्री रवि सिंह था। कविवर दिनकर ने काव्य क्षेत्र में 'कुरुक्षेत्र' और 'उर्वशी' जैसी महान कृतियां देने के अतिरिक्त 'रेणुका' 'रसवन्ती' 'सामधेनी' 'बापू' रश्मिरथी' 'व्दन्व्दगीत' 'नील कुसुम' 'परशुराम की प्रतीक्षा' 'आत्मा की ऑखे' आदि अनेक कृतिया उदान की हैं। सन 1959 में 'पदमभुषण' की उपाधि से विभूषित हुए। इन्हें संस्कृति के चार अध्याय' ग्रन्थ पर साहित्य अकादमी से पांच हजार का पुरस्कार प्राप्त हुआ। सन 1972 में 'उर्वशी' कृति पर इन्होंने पीठ पुरस्कार दिया गया। देव दुर्विपाक से 24 अप्रैल सन 1972 को उर्वशी कृति पर इन्होने पीठ पुरस्कार दिया गया । देव दुर्विपाक से 24 अप्रैल सन् 1974 को आपका असामयिक निधन हो गया।

दिनकर जी आधुनिक युग के उन कवियों में सें थें, जिन्होने काव्य जगत पर छाये हुए बादलों के कुहासे को चीरकर राष्ट्रीयता और मानवता का प्रखर प्रकाश विकीर्ण किया ।

जन-जागरण की जो ध्वनि भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के समय से आरम्भ हुई और जिसे मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी तथा नवीन जैसे कवियों ने मुखरित किया था, उसी ध्वनि को दिनकर ने भारत के कण-कण और जन-जन तक पहुँचाकर सच्चे जन पक्षधार कवि का कर्तव्य निभाया। रामधारी सिंह दिनकर छाया वादोत्तर काल के उन कवियों में से थे जो छायावाद की कल्पना के कुहासे से मानव सौन्दर्य के खोखलेपन को पहचान चुके थे। हिन्दी की छायावादी कविता के बाद कविता को यथार्थ और सत्य की दृढ भूमि पर लाने वाले कवियों में दिनकर का स्थान शीर्ष पर है। उनकी ओजस्वी वाणी ने हिन्दी कविता को प्रेम और श्रृंगार की से करी गलियों से निकालकर जीवन के संघर्ष पथ पर ला खड़ा किया था।

अंग्रेजी हुकूमत से महात्मा गाँधी सत्याग्रह और असहयोग के अहिंसात्मक उपायों द्वारा संघर्ष कर रहे थे। देश में नव जागरण की लहर फैल चुकी थी। कुछ कवि उस लहर में बहुत तेजी के साथ बह रहे थे। श्री मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, सुभद्रा कुमारी चौहान, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन राम नरेश त्रिपाठी आदि कवियों ने कविता में राष्ट्रीयता का स्वर भरा था। परन्तु सच्चे अर्थों में भारतीय युवा वर्ग के निराश हृदय में देशभक्ति की उमंग लहराने वाले एकमात्र कवि उन दिनों 'दिनकर' ही थे। अनुभूति की तीव्रता, भावों की गतिशीलता और क्रांति की पुकार दिनकर की कविता में हमेशा गूंजती थी। स्वाधीनता के उपरांत भी जब-जब देश पर बाहरी आक्रमण के बादल मंडराये, दिनकर की सिंह दहाड़ ने जन-जन में राष्ट्र प्रेम और बलि भावना का संचार किया था।

'राष्ट्रीय चेतना' से अभिप्राय

संस्कृत के अनुसार 'राष्ट्र' में 'ध' प्रत्यय के योग से राष्ट्रीय शब्द बनता है। राष्ट्र शब्द से राष्ट्रीय और राष्ट्रीय से राष्ट्रीयता शब्द की संरचना हुई है। राष्ट्र विशेष के गुणों या राष्ट्र के प्रति विशिष्ट प्रेम को राष्ट्रीयता की संज्ञा दी जा सकती है। इस प्रकार राष्ट्रीयता राष्ट्र विशेष की आत्म चेतना है। राष्ट्रीयता के अन्तर्गत राष्ट्र या देश के प्रति व्यक्ति का संवेदनशील घनिष्ठ संबंध होता है। राष्ट्रीयता मनुष्य की सहज और स्वाभाविक वृत्तियों में से एक है जिसके आधार पर वह अपने देश के प्रति आत्मीय लगाव का अनुभव करता है। वह अपने देश को समुन्नत, विकसित और गतिशील बनाने के लिए सदैव उत्सुक रहता है। इसी भावावेश में वह राष्ट्र की रक्षा, कल्याण और विकास के लिए सर्वस्व न्योछावर करते हुए अपना गौरव समझता है। यह निर्विवाद सत्य है कि जब व्यक्ति 'स्व' की परिधि से बाहर आकर सामाजिक संदर्भ में धार्मिक जातीय और धार्मिक संस्पर्श करता हुआ राष्ट्रीयता के विशाल परिवेश में पहुँचता है, तो उसमें दिव्य और आदर्श भाव विकसित हो जाते हैं। राष्ट्र प्रेम मानव राष्ट्र के समाज, प्रकृति, उसकी संस्कृति, उन्नति और विकास के प्रति भावात्मक लगाव उत्पन्न करता है राष्ट्र – प्रेम मानव – का अपूर्व भाव भरता है सच्चा राष्ट्र – मन में उत्साह, त्याग और उत्सर्ग जिससे देश के समस्त मानव, पशु–पक्षी और प्रकृति से आत्मीय लगाव का अनुभव करते हैं। प्रेम आत्मा के दिव्य भाव का साक्षात्कार करता है। राष्ट्र – प्रेम की मनमोहक छाया में पहुँचकर मानव के मन का भावात्मक विकास भूत, वर्तमान से लेकर भविष्यत तक हो जाता है। राष्ट्र प्रेम में स्वदेश के प्रति आदर और सम्मान का भाव होता है। इसी तथ्य को स्पष्ट करते हुए बाबू गुलाबराय ने कहा है– भौगोलिक इकाई के जन समुदाय के पारंपारिक सहयोग और उन्नति की अभिलाषा से प्रेरित, किसी विशिष्ट उस भू–भाग के लिए प्रेम और गर्व की भावना को राष्ट्रीयता कहते हैं। वस्तुत राष्ट्रीयता एक अनूठी भाव – धारा है, जिसमें राष्ट्र के सूक्ष्म और स्थूल दो तथ्यों के प्रति उत्तरोत्तर लगाव दिखाई देता है। राष्ट्रीयता के स्थूल तथ्यों में भौगोलिक और प्राकृतिक संदर्भ आते हैं, तो सूक्ष्म तथ्यों में सांस्कृतिक, धार्मिक, दार्शनिक आध्यात्मिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, राजनीतिक, साहित्यिक, कलात्मक, भाषायी चेतना आती है। –

राष्ट्रीयता के संदर्भ में राष्ट्र की भौगोलिक सीमा के प्रति निष्ठा होना प्राथमिक आधार है। भौगोलिक सीमा राष्ट्र की भूमि और उसकी पहचान निर्धारित करती है। भूमि विषयक देश प्रेम मनुष्य में राष्ट्रीयता की पावन चेतना का आधार सिद्ध होता है। भू–भाग के आधार पर ही समस्त जन समूह के प्रति सहज स्नेहिल भाव उभरता है। यदि भूमि की विभिन्न वस्तुओं के प्रति लगाव बढ़ता है तो प्रकृति से उदात्त तत्वों का विकास होता है। संस्कृति की भाव तरंगिणी राष्ट्र की अनुप्रेरक आत्मशक्ति है। वस्तुतः संस्कृति राष्ट्र को महिमा मंडित करने वाली आत्मशक्ति है। मनुष्य का संस्कारित आदर्श विचार उसे मानवतावादी धरातल पर पहुँचा देता है और फिर अनुकरणीय राष्ट्रीयता का विकास होता है। संस्कृति के अन्तर्गत आदर्श, परम्पराएँ, रीति रिवाज, साहित्य, संगीत और कला की बलवती भूमिका होती है। राष्ट्रीयता के लिए सांस्कृतिक एकता अनिवार्य तत्त्व है और इसके विद्यमान रहने पर ही राष्ट्र में एकता की भावना जागृत होती है। राष्ट्रीय चेतना में धार्मिकता की बलवती भूमिका होती है। राष्ट्रीयता में व्यक्ति राष्ट्र की गौरव गरिमा की रक्षा के लिए समर्पित होने के लिए तत्पर रहता है। राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने में ऐतिहासिक संदर्भों की महती भूमिका होती है। देश के निर्माण में ऋषि, मुनियों, महात्माओं, मनीषियों के चिंतन और गतिशीलता का विशेष योगदान होता है। अतीत की गौरव गाथा से जन–मन को सन्मार्ग पर गतिशील रहने की प्रेरणा मिलती है। निश्चय ही, राष्ट्रीय चेतना में राष्ट्र की स्वतंत्रता, अखंडता और एकता की पावन त्रिवेणी का प्रवाह होता है।

'चेतना' शब्द अंग्रेजी शब्द कानशियसनेस का हिन्दी पर्यायवाची है। डॉ त्रिपाठी ने चेतना को विवेकपूर्ण वैचारिकी माना है।

'दिनकर' की राष्ट्रीय चेतना

दिनकर जी का अधिकांश साहित्य राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत है। चीन से युद्ध के दिनों में दिनकर की 'परशुराम की प्रतीक्षा' कविता अत्यन्त प्रसिद्ध हुई। इस

कविता में देश के सैनिकों को अहिंसा त्यागकर पौरुष बनने का आह्वान किया गया है। सन् 1962 के चीनी भारतीय युद्ध के समय कविवर दिनकर ने परशुराम की प्रतीक्षा' कविता में देश के पौरुष – को जागृत करते सिंह गर्जना की थी –

वैराग्य छोड वाहों की विभा संभालो,
चट्टानों की छाती से दूध निकालो।
है रुकी जहाँ भी धार, शिलाएँ तोड़ो,
पीयूष चन्द्रगाओं को पकड़ निचोड़ो।
चढ तुंग शैल शिखरों पर सोम पियोरे,
योगियों नहीं, विजयी के
(परशुराम की प्रतीक्षा) सदृश जियोरे

'दिनकर' अपनी काव्य चेतना के बारे में लिखते हैं–

क्रांति – धात्रि कविते । उठ अंबर में आग लगा दे।
पतन, पाप, पाखंड जले, जग में ऐसी ज्वाला सुलगा दे।

दिनकर प्रेम राष्ट्रीयता मानवता और क्रांति के गायक है। उनकी कविता में राष्ट्राती जागरण का स्वर है। एक ओर वे अपने अतीत से प्रभावित हैं तो दूसरी और वर्तमान की अधोगति से क्षुब्ध प्राचीन गौरव के प्रति उनके मन में अगाध रहा है। दिनकर की में दीन दुःखी और दलितों के प्रति सहानुभूति एवं संवेदना भी है। उन्होंने भूमिकों और कृषको के दयनीय जीवन का मार्मिक अंकन किया है। निम्न पंक्तियों में उनकी सहानुभूति एवं संवेदना द्रष्टव्य है

आहे उठो दीन कृषकों की।
मजदूरों की तड़प पुकारें।
अरी गरीबी के लोहू पर.
खड़ी हुई तेरी दीवारें.....।

कवि ने हिमालय का मानवीकरण किया है। वास्तव में कवि हिमालय के माध्यम से भारतीयों को संबोधित करते हुए कहते हैं–

ओ, मीन तपस्वी लीन यती । –
पत भर को तो कर दूगोन्मेष ।
रे ज्वालाओं से दग्ध, विकल
सुख सिन्धु, पंचनद, ब्रह्मपुत्र,
है तड़प रहा पद पर स्वदेश
गंगा, यमुना की अमिट – धार,
जिस पुण्य भूमि की ओर बही,
तेरी विगलित करुणा उदार ।
(हिमालय)

कविवर दिनकर कहते हैं हे हिमालय, देश के कितने वीरपुरुष रूपी रत्न हमसे छिन गए, जो स्वतंत्रता की चिनगारी जलाए रहे। भारत का अनंत वैभव चला गया। हिमालय समाधिस्थ होकर साधना ही करता रहा और प्यारा देश भारत इन वीररत्नों से रहित हो गया। महाभारत काल में दुःशासन ने केवल एक द्रौपदी के बाल खींच लिये थे, जिसके कारण महाभारत के भयंकर युद्ध की योजना बनाई गई और आज न जाने कितनी स्त्रियों के सतीत्व को लूटा जा रहा है और कितनी कन्याओं का अपहरण हो रहा है. किन्तु फिर भी किसी के – मन में पीड़ा नहीं कि इन अत्याचारों का प्रतिरोध किया जाए। चित्तौड़ से पूछो कि अत्याचार होने पर या किसी नारी की और किसी की कुदृष्टि होने पर बड़े–बडे संग्राम रचे गए और नारियों जौहर व्रत करके जीते जी अपने प्राणों की बलि दे दिया करती थीं। कवि ने पीड़ा को निम्न शब्दों में प्रकट किया है –

कितनी मणियाँ लुट गई ? मिटा
कितना मेरा वैभव अशेष
तू ध्यान मग्न ही रहा, इ्र
वीरान हुआ पयारा स्वदेश
कितनी द्रौपदियों के बल खुले ?
किन किन कलियों का अंत हुआ ?
कह हृदय खोल चितौड़ ! यहाँ
कितने दिन ज्वाल–बसंत हुआ ?
(हिमालय)

हिमालय का गौरव गान करके देशोद्धार की प्रेरणा देते हुए कवि भारत के अतीत वैभव और वीर भाव को जगाना चाहता है। कवि हिमालय को संबोधित करके कहता है कि हे हिमालय ! आज इस समय हमें अर्जुन और भीम तथा उनके क्रमशः गांडीव धनुष और गदा की

आवश्यकता है। उन्हें लौटा दे। आज युद्ध में पूर्ण पराक्रम दिखाकर शत्रु पर विजय प्राप्त करने वाले योद्धाओं की आवश्यकता है। कवि शंकर के आवास स्थल हिमालय से प्रार्थना-करता है कि तू शिवजी से प्रार्थना कर कि वे पुनः एक बार तांडव नृत्य करें जिससे सारे भारत में 'हर-हर', 'बम बम' की ध्वनि गूँज उठे जिसकी अंगड़ाई लेकर सारी भूमि काँप अर्थात् सर्वत्र भयंकर हलचल मच जाए। यथा-

रोक युधिष्ठिर को न यहाँ,
जाने दे उनकी स्वर्ग धीर पर,
फिरा हमें गांडीव -गदा,
लौटा दे अर्जुन भीम वीर।
कह दे शंकर से, आज करें,
के प्रलय नृत्य फिर एक बार ।
सारे भारत में गूंज उठे,
हर - हर बम -बम का फिर महोच्चार।
(हिमालय)

कवि देश के लोगों को जागृत करते हुए कहता है कि लक्ष्य पास आ जाने पर थक कर बैठ जाना उचित नहीं है-

दिशा दीप्त हो उठी प्राप्त करपुण्य - प्रकाश तुम्हारा। लिखा जा चुका अनल अक्षरों में इतिहास तुम्हारा । जिस मिट्टी ने लहू पिया यह फूल खिलायेगी ही। अम्बर पर धन बन छाएगा ही उच्छवास तुम्हारा।
और अधिक ले जाँच, देवता इतना क्रूर नहीं है, थककर बैठ गये क्यों भाई मंजिल दूर नहीं है।
(आशा का दीपक)

उक्त कविता का आशय यह है कि जिस भारत भूमि की स्वतंत्रता के लिए इतने बलिदान हुए, उसमें स्वतंत्रता का फूल खिलकर ही रहेगा। यह आशा अवश्य फलवती होगी। हमारी पीड़ा जन्य साँसे आकाश में बादल बनकर अवश्य छायेगी जिससे स्वतंत्रता के रूप में सुखों की वर्षा होगी। हे भाई अब लक्ष्य निकट ही है, अत थक कर मत बैठो। तुम साधना-रम करो जिससे तुम शीघ्र लक्ष्य की प्राप्ति कर सको।

'आग की भीख कविता में देश की दयनीय स्थिति का चित्रण करते हुए भगवान से स्वदेश के हित वरदान की भीख माँगता है कि उसके देश की सारी बुराइयाँ दूर हो जायें -

मन की बंधी उमंगें असहाय जल रही हैं.
अरमान आरजू की लाशें निकल रही हैं।
भीगी - खुली पलों में रातें पुकारते हैं।
सोती वसुंधरा जब तुझको पुकारते हैं।
इनके लिए कहीं से निर्भीक तेज ला दे,
पिघले हुए अनल कर इनको अमृत पिला दे ।
उन्माद, बेकली का उत्थान माँगता हूँ,
विस्फोट मांगता हूँ, तूफान माँगता हूँ।

अर्थात हे प्रभु देश के युवकों के हृदयों में हिलोरे ले रही उमंगे साधनों के अभाव में व्यर्थ जल रही है। उनके मन की इच्छाओं और तमन्नाओं का जनाजा निकल रहा है। आँखों से निकले आँसुओं के कारण भीगी और खुली आँखों के साथ पल-पल गिन कर रातें काट देते हैं। जब सारी धरती सुख पूर्वक सो रही होती है तो ये निराश युवक सहायता के लिए तुझे पुकारते हैं। हे प्रभु । तू इन युवकों के हृदय में निर्भीक तेज का संचार कर दे।
कविवर दिनकर ने ओजस्वी शब्दों में राष्ट्रीय चेतना के संदर्भ में अतीत का गौरव गान किया है। रेणुका में संकलित हिमालय कविता में ये कहते हैं-

तू पूछ अवध से, राम कहाँ ? वृंदा घनश्याम कहाँ ?
ओ मगच ! कहाँ मेरे अशोक ? वह चन्द्रगुप्त बलधाम कहाँ ?
हे कपिलवस्तु । कह बुद्ध देव के ये मंगल उपदेश कहाँ ?
तिब्बत, इरान, जापान,चीन तक गये हुए संदेश कहाँ ?

वस्तुतः कविवर 'दिनकर' संवेदनशील कवि है। उनका अधिकांश साहित्य राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत है। उन्होंने सामाजिक उत्थान-पतन और आंदोलन से प्रभावित होकर काव्य-सृजन किया है। देश पर जब जब संकट के बादल घिरते हैं, मानव जीवन - संघर्ष में जूझने लगता है, तब तब 'दिनकर' की कविता जन- मानस में ऊर्जा का संचार करती है। उनकी कविता देश की संस्कृति, सभ्यता, भाषा, परम्परा और आदर्श आदि की अनूठी एकता की आधार भूमि प्रस्तुत करती है।

कवि
राधाकान्त पाण्डेय

नाम से यह तस्वीर हम सबने कई बार देखी होगी, यह तस्वीर वर्षो पुरानी सूडान के अकाल में अफ्रीकन फोटोग्राफर केविन कार्टर द्वारा 1993 में खींची गई थी। इस चित्र में एक गिद्ध भूख से मर रही एक छोटी लड़की के मरने का इंतजार कर रहा है। इस संवेदनशील चित्र के लिए फोटोग्राफर कार्टर को पुलित्जर पुरस्कार भी प्रदान किया गया। पर कार्टर इस सम्मान को पाने के कुछ दिन बाद ही अवसाद में आत्महत्या कर इस दुनिया को अलविदा कह गए।

दर असल इस सम्मान को पाने के बाद कार्टर द्वारा खींची गई इस तस्वीर की चर्चा विश्व के कई प्रमुख चैनल और नेटवर्क पर होने लगी। जिसके बाद एक 'फोन इंटरव्यू' के दौरान कार्टर से फोन कर्ता द्वारा पूछे गए एक सवाल ने उन्हें विचलित कर दिया,वह सवाल था कि बाद में उस लड़की का क्या हुआ?

उस सवाल से निरुत्तर कार्टर ने कहा कि वह यह देखने के लिए रुक नहीं पाए क्योंकि उन्हें अपनी फ्लाइट पकड़नी थी। इस जवाब पर उस व्यक्ति ने कार्टर से कहा कि ''मैं आपको बताना चाहता हूँ, कि उस दिन वहां दो गिद्ध थे जिसमें से एक के हाथ में कैमरा था !!''
उस व्यक्ति द्वारा उलाहना के वो शब्द कार्टर को इतना विचलित कर गए कि उन्होंने अवसाद ग्रस्त होकर आत्महत्या कर ली।
इस घटना को गुजरे भले ही वर्षो हो गए हों पर आये दिन हमारे आस पास बहुत सी ऐसी घटनाएं घटित होती हैं, जिन्हें हम देख कर भी अनदेखा कर देते हैं या मात्र दर्शक बनकर रह जाते हैं। सामाजिक और नैतिक उत्तरदायित्व के प्रति हम अपनी निष्क्रियता और गलतियों को अनदेखा कर दोषारोपण किसी और पर डाल देते हैं। चाहे वह शासन-प्रशासन, कोई व्यक्ति-संस्था या और हो, इन सब पर न भी डाल पाए तो कई बार हम दोष किस्मत पर भी डालकर अपने दायित्वों की इतिश्री कर लेते हैं। सोचिए अगर उक्त परिस्थिति में कार्टर उस छोटी बच्ची को यूनाईटेड नेशन्स के फीडिंग सेंटर तक पहुँचा देते जहाँ पहुँचने की वह बच्ची कोशिश कर रही थी तो शायद वह बच्ची और कार्टर आज दोनों इस दुनिया में हम सब के बीच होते। कठिन परिस्थितियों का होना उतना दु:खद नहीं जितना उन परिस्थितियों से संघर्ष न करना है। हम सभी को अपार ईश्वरीय सामर्थ्य प्राप्त है, जिसके द्वारा किसी भी परिस्थितियों से निकलने का रास्ता हमारे लिए असंभव नहीं है। किंतु हमने अपने आत्म बल, चेतना और अपने अपरिमित शक्ति को या तो सुप्तकर रखा है या फिर उसका उपयोग नकारात्मक सृजन में खर्च कर रहे हैं।

दुनिया के लगभग सभी संत,महात्मा,मनो वैज्ञानिक और विद्वानों का यही मानना है कि हम-सब अपनी सोच के ही पर्याय हैं। हम जैसा सोचेंगे जैसा दृष्टिकोण हमारा होगा वैसी परिस्थितियों का निर्माण भी हमारे आस पास होता जाएगा। आज देश,समाज और अंतरराष्ट्रीय जगत के सामने कोरोना रूपी महामारी के साथ पर्यावरण असंतुलन,जल संकट,भूख,गरीबी,कुपोषण,सामाजिक विसंगति, सहित अनेकों छोटी-बड़ी समस्याएं सुरसा की तरह मुंह फाडे खड़ी हैं, जिनका निदान हमें-आपको मिलकर ढूढ़ना है। धरती पर अगर मानव मात्र के अस्तित्व को बचाना है तो हमें समान रूप से संघर्ष करना पड़ेगा। जरा सोचिए हम समस्याओं को चिन्हित कर उनके दोषारोपण के लिए चरित्र के चयन पर ही सारी ऊर्जा खर्च करते रहे तो हल ढूढ़ने कौन आएगा?

आइए मन की समस्त नकारात्मकता, विकृति, दौर्बल्य और विषमताओं से ऊपर उठकर समस्या के आगे निदान हेतु प्रयास करें। आज जब समूचा विश्व कोरोना रूपी विभीषिका से उबरने का प्रयास कर रहा है ऐसे समय में यह हमारा प्रारम्भिक उतरदायित्व बनता है कि नकारात्मक दृष्टिकोण के साथ देश, समाज और स्वयं को सशक्त व आदर्श उदाहरण के रूप में लोगों के लिए प्रेरणादायी बनें। ताकि आने वाली पीढ़ियाँ आदर्श स्थिति में जीवन यापन कर पाएं। यही ऐसी घटनाओं से मिलने वाली सीख है।

स्वच्छ भारत अभियान भारत सरकार द्वारा आरंभ किया गया राष्ट्रीय स्तर का अभियान है जिसका उद्देश्य गलियों , सड़को, तथा अधोसरंचना को साफ सुथरा करना और कुड़ा साफ रखना है । यह अभियान 2 अक्टुबर 2014 को आरंभ किया गया । राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने देश को दासता से मुक्त कराया परंतु स्वच्छ भारत का उनका सपना पूरा नही हुआ ।

मनोज निर्मलकर
असि. कम. टाय. (कार्मिक)
डोंगरी बुर्जुग खान

रामअवतार देवांगन
महामंत्री,
मॉयल कामगार संघटन

भ्रष्टाचार पर लगाम कसने की दिशा में पहल

अभी हाल ही में लोकसेवकों के भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने के मामले में निश्चय ही सुप्रीम कोर्ट का ताजा फैसला ऐतिहासिक साबित होगा। न्यायमूर्ति एस. ए. नजीर की अध्यक्षता वाली पांच सदस्यीय संविधान पीठ ने कहा कि भ्रष्टाचार के मामले में अवैध लाभ हासिल करने के आरोप में कोई प्रत्यक्ष मौखिक या दस्तावेजी सबूत नही होने की सूरत में किसी लोक सेवक को परिस्थिति जन्य साक्ष्य के आधार पर भी दोषी ठहराया जा सकता है दरअसल भ्रष्टाचार करने वालों ने पकड़े जाने से बचने के लिए इतना एहतियात बरतना शुरू कर दिया है कि अब उनके खिलाफ प्रत्यक्ष या दस्तावेजी सबूत हासिल कर पाना बहुत आसान नही रह गया है। संभवत: उनके इसी पैंतरे को ध्यान में रख कर सर्वोच्च अदालत ने यह फैसला दिया है ताकि शासन-प्रशासन को साफ-सुथरा एवं भ्रष्टाचार मुक्त बनाया जा सके। बेशक ईमानदार लोकसेवकों के लिए डरने की कोई जरूरत नहीं है क्योंकि भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम संशोधित विधेयक-2018 में प्रावधान है कि लोकसेवको पर भ्रष्टाचार का मामला चलाने से पहले केंद्र के मामले में लोकपाल से तथा राज्यों के मामले में लोकायुक्तों से अनुमति लेनी होगी। यह सच है कि देश मे भ्रष्टाचार पहले के मुकाबले कम हुआ है लेकिन वैश्विक स्तर पर इस मामले में हम अभी भी बहुत पीछे है इसी साल जनवरी में जारी हुए ट्रांसपरेंसी इंटरनेशनल के भ्रष्टाचार संवेदन सूचकांक (सीपीआई 2021) में भारत एक अंक चढ़कर 85वें स्थान पर आ गया। चूंकि 2020 में भारत 86वें स्थान पर था, इसलिए कहा जा सकता है कि इसमें थोडा सुधार है लेकिन 180 देशों की सूची मे भारत जैसा बड़ा देश 85वें स्थान पर रहकर संतोष नहीं कर सकता है इसलिए सरकार तो अपनी तरफ से भ्रष्टाचार पर अधिकाधिक अंकुश लगाने के लिए प्रयास कर ही रही है। अदालत का ताजा आदेश भी इस मामले में एक कदम सर्वोच्च अदालत ने तो यहां तक कहा है कि यदि शिकायतकर्ता बयान से मुकर जाता है या उसकी मृत्यु हो जाती है या फिर सुनवाई के दौरान वह साक्ष्य पेश करने मे असमर्थ रहता है तो किसी अन्य गवाह के मौखिक या दस्तावेजी सबूत का स्वीकार कर अवैध लाभ की मांग संबंधी अपराध को साबित किया जा सकता है या अभियोजन पक्ष परिस्थितिजन्य साक्ष्यों के आधार पर मामला सिध्द कर सकता है। उम्मीद की जानी चाहिए कि सर्वोच्च अदालत के इस फैसले से भ्रष्टाचार पर और भी लगाम कसने में मदद मिलेगी और जनता को साफ-सुथरा एवं भ्रष्टाचार मुक्त शासन-प्रशासन मिल सकेगा। कहने का मतलब है, कि सर्वोच्च न्यायालय ने रिश्वतखोर सरकारी नौकरों के लिये नई मुसीबत खड़ी कर दी है, अब उनका अपराध सिध्द करने के लिये ऐसे प्रमाणों की जरूरत नही होगी कि रिश्वत देने वाला और लेने वाला खुद स्वीकार न करे, कि मैने रिश्वत दी है, और मैने रिश्वत ली है, यदि वे खुद स्वीकार न करें या अपने अपने कथन से पलट जाये या उनमें से मर जाये तो भी अदालत को न्याय जरूर करना होगा।

रामअवतार देवांगन
महामंत्री,
मॉयल कामगार संघटन

"क्या चल रहा है"?

गुरू जी ने अपने उद्यमी शिष्यों को बताया कि शाश्वत जी ने अगले सप्ताह मिलने का वक्त दिया है, तो सबने एक ही बात पूछी 'कौन शाश्वत जी?' व्यास जी ने समझाया शाश्वत जी मीडिया और प्रोपेगंडा की दुनिया से दुर रहते है, न किसी पत्रिका के मुख्य पृष्ठ पर उनकी तस्वीर होती है, नही अखबार के पन्नों में उनका जिक्र होता है, इसलिए आम लोग उनको नहीं जानते. लेकिन व्यवसाय जगत की बड़ी-बड़ी हस्तिया उनका सम्मान करती है, कई कंपनी-अधिकारी और कंपनी-मालिक खुद चलकर उनके दरवाजे पर जाते है। युवा उद्यमियों की उत्सुकता बढ़ी, एक ने पूछा, 'क्यों? ऐसी क्या खास बात है, उनमें?' व्यास जी ने कहा, 'उनको व्यवसाय-जगत का 'योगी' कहा जाता है. उनसे मिलकर बड़ी-बड़ी समस्याओं का समाधान खुद हो जाता है। अगले सप्ताह जब वो लोग शाश्वत जी से मिलने पहुंचे तो मृदु-मुस्कान के साथ उन्होने सबका स्वागत किया, युवा व्यवसाइयों ने उन्हे अपन व्यवसाय के बारे में बताया।

शाश्वत जी ने सब की बात ध्यान से सुनी, डायरी में नोट्स लिखे। फिर एक युवा ने कहा,जिंदगी में आपाधापी रहती है, काम पर ध्यान नहीं रह पाता। इसके लिए कोई मंत्र बताइए। शाश्वत जी धीर-गंभीर होते हुये बोले, 'उसका मंत्र है : लोगो से पुछना क्या चल रहा है । एक युवा ने पूछा, आपका मतलब है हमें ज्यादा लोगो से मिलना चाहिए, पूछना चाहिए उसकी जिंदगी में क्या चल रहा है। शाश्वत जी ने एक बडी सी मुस्कान के साथ कहा, 'वो जरूरी है, लेकिन उससे भी ज्यादा जरूरी है, खुद से पूछना कि भाई, कि क्या चल रहा है? सभी चुप रहे, शाश्वत जी बात की गहराई में गए 'हम अक्सर जो भी काम सामने आता है, उसमें उलझ जाते हैं। कई बार उसमें इतने व्यस्त हो जाते हैं, कि खाना-पीना भी भूल जाते है। इसीलिए मैं दिन में तीन-चार बार अपने आप से पूछता हूं, इस वक्त क्या चल रहा है? जो मैं कर रहा हूं या जो विचार मेरे मन में चल रहे हैं, क्या वो मेरे लक्ष्य की तरफ ले जाने वाले हैं? अक्सर उत्तर ना में होता हैं, तो मैं तुरंत सही काम को पकड़ लेता हूं। यूं भी होता है कि मैं किसी क` साथ बातचीत कर रहा होता हूं, लेकिन मन कहीं और होता है? जैसे ही मैं पूछता हूं: मन फिर से संवाद में लौट आता है। कई बार मैं जानता हूं कि मैं देर तक सोशल मीडिया पर वक्त जाया करता हूं। तब भी खुद से पूछता हूं, किस समस्या से मैं भाग रहा हूँ? और क्यों? फिर उन समस्याओं के समाधान की तरफ मन को मोड़ता हूं। जब हम समस्याओं को इतने गौर से देखते हैं। उनका सामना करते हैं तो धीरे-धीरे मन समझ जाता है कि उनसे कतराने की तरकीबें काम न आएंगी। मन पर आपका नियंत्रण होने लगेगा। और जब मन पर नियंत्रण होने लगेगा तो आपको पता चल जायेगा। जब उनसे विदा ले कर बाहर निकले तो युवा उद्यमी समझ चुके थे क्यों बडी -बड़ी हस्तियां उनके पास आती हैं। क्यों गुरूजी भी उनका आदर करते हैं. कहने का मतलब - गुरु मंत्र ये है कि..... वक्त - वक्त पर अपने आपसे पूछते रहिए।

"क्या चल रहा है"?

जैसे मुझे भी लोग सब कुछ हो जाने के बाद अब पुछते है, कि मॉयल में ''क्या चल रहा है'' ?

संसाधनों को कहीं निगल न जाए बढती आबादी

अमित कुमार सिंह
प्रमुख प्रबंधक (कार्मिक)
डोंगरी बुजुर्ग खान.

पुरी दुनिया की आबादी इस समय करीब 7.7 अरब हैं, जिसमें सबसे ज्यादा चीन की आबादी 1.45 अरब हैं जब कि भारत के मामले में 1.4 अरब जनसंख्या के साथ विश्व में दूसरे स्थान पर हैं। विश्व की कुल आबादी में से करीब 18 फीसदी लोग भारत में रहते हैं और दुनिया के हर 6 नागरीकों में से एक भारतीय हैं। अगर भारत में जनसंख्या की सघनता का स्वरुप देखें तो 1991 में देश में जनसंख्या की संघनता 77 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर थी, जो 2011 में 382 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर हो गई। भारत में बढती आबादी के बढते खतरों को इसीसे बखूबी समझा जा सकता हैं कि दुनिया की कुल आबादी का करीब छटा हिस्सा विश्व के महज ढाई फीसदी भूभाग पर ही रहने को मजबूर हैं। जाहिर हैं कि किसी भी देश की जनसंख्या तेज गती से बढेगी तो वहाँ उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव भी उसी के अनुरुप बढता जाऐगा। आकडों पर नजर डाले तो आज दुनिया भर में करीब एक अरब लोग भुखमरी के शिकार हैं और अगर वैश्विक आबादी बढती रही तो भुखमरी की समस्या बन जाऐगी, जिससे निपटना इतना आसान नहीं होगा। बढती आबादी के कारण ही दुनिया भर में तेल, प्राकृतिक गैसों, कोयला इत्यादि उर्जा के संसाधनों पर दबाव अत्याधिक बढ गया हैं। जिस अनुपात में भारत में आबादी बढ रही हैं। उस अनुपात में उसके लिए भोजन, पानी, स्वास्थ्य, चिकित्सा इत्यादि सुविधाओं की व्यवस्था करना किसी भी सरकार के लिए आसान नहीं हैं।

जूसंख्या संबंधी संयुक्त राष्ट की चौंकाने वाली एक रिपोर्ट में कहा गया था कि वर्ष 2050 तक एशिया महाद्वीप की आबादी पांच अरब हो जाऐगी और सदी के अंत तक दुनिया की आबादी 12 अरब तक पहूँच जाएगी। 2024 तक भारत और चीन की जनसंख्या बराबर हो जाएगी और 2027 में भारत चीन को पछाडकर विश्व का सर्वाधिक आबादी वाला देश बन जाएगा। रिपोर्ट के अनुसार 2050 तक चीन की आबादी 140 करोड होगी जबकि भारत की आबादी 165 करोड तक पहूँचने का अनुमान हैं। सयुंक्त राष्ट्र की रिपोर्ट के मुताबिक भारत में प्रतिवर्ष ऑस्ट्रेलिया की कुल जनसंख्या के बराबर बच्चों का जन्म होता हैं। हालांकि हम इस बात पर थोडा संतोष व्यक्त कर सकते हैं कि जनसंख्या वृद्धि दर के वर्तमान आंकडों की देश की आजादी के बाद के शुरुआती दो दशकों से जनसंख्या वृद्धि की दर में निरंतर गिरावट दर्ज की गई हैं लेकिन यह गिरावट दर काफी धीमी रही हैं। आर्थिक सर्वेक्षण के मुताबिक भारत में पिछले कुछ दशकों में जनसंख्या वृद्धि की गति धीमी हुई हैं। वर्ष 1971-81 के मध्य वार्षिक वृद्धि दर 2.5 प्रतिशत थी, जो 2011-16 में घटकर 1.3 प्रतिशत रह गई। जनसंख्या वृद्धि की रफ्तार को नियंत्रित रखने के लिए औसत प्रजननदर 2.1 होनी चाहिए और हाल ही में राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण द्वारा जारी आंकडों से पता चला ह कि देश में यह दर 2.2 से घटकर 2 हो गई हैं। पिछले कुछ दशकों में देश में शिक्षा और स्वास्थ्य के स्तर में निरंतर सुधार हुआ हैं उसी का असर माना जा सकता हैं कि धीरे धीरे जनसंख्या वृद्धि दर में गिरावट आयी हैं लेकिन यह इतनी भी नहीं हैं, जिस पर खुब जश्न मनाया जा सकें।

पर्यावरण और परिस्थितिकी

अमित कुमार सिंह
प्रमुख प्रबंधक (कार्मिक)
डोंगरी बुजुर्ग खान.

पारिस्थितिक तंत्र का सिद्धांत ब्रह्मांड के सिद्धांत से प्रमुख रूप से प्रभावित है, जिसके अनुसार इस दुनिया का हर कण और जीवित वस्तु परम शक्ति-ईश्वर द्वारा विकसित है और इस प्रकार प्रकृति पर मनुष्य का कोई विशेष अधिकार नहीं है। वेदों, पुराणों, उपनिषदों तथा अन्य धार्मिक ग्रन्थों में वनस्पतियों, वृक्षों तथा वनों के महत्व का गहन विवेचन किया गया है। मानव जीवन में पेड़-पौधों का मूल्य वाराह पुराण में स्पष्ट रूप से वर्णित है, जो नियमित वृक्षारोपण के माध्यम से स्वर्ग के मार्ग का समर्थन करता है। मत्स्य पुराण और पदम पुराण में भी महान वृक्षारोपण पर्व-वृक्ष महोत्सव का उल्लेख मिलता है।

पर्यावरण और इकोलॉजी की स्थिति इतनी गंभीर हो चुकी है कि अगर अभी हम एक कदम नहीं उठाएंगे तो स्थिति नियंत्रण से बाहर हो जाएगी। इससे अपूरणीय क्षति होगी। पर्यावरण और पारिस्थितिकी तंत्र को नष्ट करके मनुष्य आत्म-विनाश के लिए ही परिस्थितियों का निर्माण कर रहा है। निस्संदेह प्रकृति के संरक्षण और पुनर्जीवन का प्रश्न आज का ज्वलंत विषय है।

राष्ट्रीय पर्यावरण नीति, 2006

पर्यावरण और वन मंत्रालय (एमओईएफ) द्वारा राष्ट्रीय पर्यावरण नीति (एनईपी) का उद्देश्य सभी विकास गतिविधियों में पर्यावरण संबंधी चिंताओ को मुख्यधारा में लाना है। यह संसाधनों और बिंदुओं के संरक्षण पर जोर देता है कि संरक्षण में सहायता करने का सबसे अच्छा तरीका यह सुनिश्चित करना है कि संसाधनों पर निर्भर रहने वाले लोग संसाधनों के क्षरण की तुलना में संरक्षण से बेहतर आजीविका प्राप्त करें। यह तर्क देता है कि पर्यावरणीय गिरावट अक्सर आबादी के बीच गरीबी और खराब स्वास्थ्य परिणामों की ओर ले जाती है। नीति में अंतर्निहित सिद्धांत सतत विकास प्रक्रियाओं में मानव की महत्वपूर्ण भूमिका है पर्यावरणीय संसाधनों की गैर-परक्राम्यता और अतुलनीय मूल्य सभी के लिए विकास का अधिकारय पर्यावरणीय संसाधनों के उपयोग में समानता और पर्यावरणीय मुद्दों से निपटने के लिए विकेंद्रीकृत और बहु-क्षेत्रीय दृष्टिकोण की आवश्यकता। यह नीति अनुच्छेद 45 ए, 51 ए (जी) के तहत पर्यावरण के प्रति हमारी राष्ट्रीय प्रतिबद्धता और संविधान के अनुच्छेद 21 की न्यायिक व्याख्या का जवाब है।

आज़ादी का अमृत महोत्सव

स्वयं को जाने

आशिष सूर्यवंशी
वरिष्ठ प्रबंधक (कार्मिक)
मुख्यालय, नागपूर

एक भिखारी था! रेल सफर में भीख माँगने के दौरान एक सूटबूट पहने सेठ जी उसे दिखे। उसने सोचा कि यह व्यक्ति बहुत अमीर लगता है। इससे भीख माँगने पर यह मुझे जरूर अच्छे पैसे देगा। वह उस सेठ से भीख माँगने लगा।

भिखारी को देखकर उस सेठ ने कहा, तुम हमेशा मांगते ही हो क्या कभी किसी को कुछ देते भी हो?
भिखारी बोला साहब मैं तो भिखारी हूँ, हमेशा लोगों से मांगता ही रहता हूँ। मेरी इतनी औकात कहाँ कि किसी को कुछ दे सकूँ। सेठ,जब किसी को कुछ दे नहीं सकते तो तुम्हें मांगने का भी कोई हक नहीं है। मैं एक व्यापारी हूँ और लेन-देन में ही विश्वास करता हूँ, अगर तुम्हारे पास मुझे कुछ देने को हो तभी मैं तुम्हे बदले में कुछ दे सकता हूँ। तभी वह स्टेशन आ गया जहाँ पर उस सेठ को उतरना था वह ट्रेन से उतरा और चला गया।

इधर भिखारी सेठ की कही गई बात के बारे में सोचने लगा। सेठ के द्वारा कही गयीं बात उस भिखारी के दिल में उतर गई। वह सोचने लगा कि शायद मुझे भीख में अधिक पैसा इसीलिए नहीं मिलता क्योकि मैं उसके बदले में किसी को कुछ दे नहीं पाता हूँ।
लेकिन मैं तो भिखारी हूँ, किसी को कुछ देने लायक भी नहीं हूँ। लेकिन कब तक मैं लोगों को बिना कुछ दिए केवल मांगता ही रहूँगा।

बहुत सोचने के बाद भिखारी ने निर्णय किया कि जो भी व्यक्ति उसे भीख देगा तो उसके बदले मे वह भी उस व्यक्ति को कुछ जरूर देगा। लेकिन अब उसके दिमाग में यह प्रश्न चल रहा था कि वह खुद भिखारी है तो भीख के बदले में वह दूसरों को क्या दे सकता है।

इस बात को सोचते हुए दिन भर गुजरा लेकिन उसे अपने प्रश्न का कोई उत्तर नहीं मिला।
दुसरे दिन जब वह स्टेशन के पास बैठा हुआ था तभी उसकी नजर कुछ फूलों पर पड़ी जो स्टेशन के आस-पास के पौधों पर खिल रहे थे। उसने सोचा क्यों न मैं लोगों को भीख के बदले कुछ फूल दे दिया करूँ। उसको अपना यह विचार अच्छा लगा और उसने वहां से कुछ फूल तोड़ लिए।

वह ट्रेन में भीख मांगने पहुंचा। जब भी कोई उसे भीख देता तो उसके बदले में वह भीख देने वाले को कुछ फूल दे देता। उन फूलों को लोग खुश होकर अपने पास रख लेते थे। अब भिखारी रोज फूल तोड़ता और भीख के बदले में उन फूलों को लोगों में बांट देता था।

कुछ ही दिनों में उसने महसूस किया कि अब उसे बहुत अधिक लोग भीख देने लगे हैं। वह स्टेशन के पास के सभी फूलों को तोड़ लाता था।

जब तक उस के पास फूल रहते थे तब तक उसे बहुत से

लोग भीख देते थे। लेकिन जब फूल बांटते बांटते खत्म होते तो उसे भीख भी नहीं मिलती थी अब रोज ऐसा ही चलता रहा। एक दिन जब वह भीख मांग रहा था तो उसने देखा कि वही सेठ ट्रेन में बैठे है जिसकी वजह से उसे भीख के बदले फूल देने की प्रेरणा मिली थी।
वह तुरंत उस व्यक्ति के पास पहुंच गया और भीख मांगते हुए बोला आज मेरे पास आपको देने के लिए कुछ फूल हैं। आप मुझे भीख दीजिये बदले में मैं आपको कुछ फूल दूंगा।

सेठ ने उसे भीख के रूप में कुछ पैसे दे दिए और भिखारी ने कुछ फूल उसे दे दिए। उस सेठ को यह बात बहुत पसंद आयी। सेठ,वाह क्या बात है? आज तुम भी मेरी तरह एक व्यापारी बन गए हो। इतना कहकर फूल लेकर वह सेठ स्टेशन पर उतर गया। लेकिन उस सेठ द्वारा कही गई बात एक बार फिर से उस भिखारी के दिल में उतर गई। वह बार-बार उस सेठ के द्वारा कही गई बात के बारे में सोचने लगा और बहुत खुश होने लगा। उसकी आँखे अब चमकने लगीं, उसे लगने लगा कि अब उसके हाथ सफलता की वह चाबी लग गई है जिसके द्वारा वह अपने जीवन को बदल सकता है। वह तुरंत ट्रेन से नीचे उतरा और उत्साहित होकर बहुत तेज आवाज में उपर आसमान की ओर देखकर बोला, मैं भिखारी नहीं हूँ मैं तो एक व्यापारी हूँ।

मैं भी उस सेठ जैसा बन सकता हूँ, मैं भी अमीर बन सकता हूँ!

लोगों ने उसे देखा तो सोचा कि शायद यह भिखारी पागल हो गया है। अगले दिन से वह भिखारी उस स्टेशन पर फिर कभी नहीं दिखा। एक वर्ष बाद इसी स्टेशन पर दो व्यक्ति सूटबूट पहने हुए यात्रा कर रहे थे। दोनों ने एक दूसरे को देखा तो उनमे से एक ने दूसरे को हाथ जोड़कर प्रणाम किया और कहा क्या आपने मुझे पहचाना? सेठ- नहीं तो शायद हम लोग पहली बार मिल रहे हैं।

भिखारी सेठ जी आप याद कीजिए हम पहली बार नहीं बल्कि तीसरी बार मिल रहे हैं।
सेठ मुझे याद नहीं आ रहा वैसे हम पहले दो बार कब मिले थे?
अब पहला व्यक्ति मुस्कुराया और बोला, हम पहले भी दो बार इसी ट्रेन में मिले थे। मैं वही भिखारी हूँ जिसको आपने पहली मुलाकात में बताया कि मुझे जीवन में क्या करना चाहिए और दूसरी मुलाकात में बताया कि मैं वास्तव में कौन हूँ। नतीजा यह निकला कि आज मैं फूलों का एक बहुत बड़ा व्यापारी हूँ और इसी व्यापार के काम से दूसरे शहर जा रहा हूँ। आपने मुझे पहली मुलाकात में प्रकृति नियम बताया था। जिस के अनुसार हमें तभी कुछ मिलता है जब हम कुछ देते हैं। लेन देन का यह नियम वास्तव में काम करता है, मैंने यह बहुत अच्छी तरह महसूस किया है। लेकिन मैं खुद को हमेशा भिखारी ही समझता रहा, इससे ऊपर उठकर मैंने कभी सोचा ही नहीं था और जब आपसे मेरी दूसरी मुलाकात हुई तब आपने मुझे बताया कि मैं एक व्यापारी बन चुका हूँ। अब मैं समझ चुका था कि मैं वास्तव में एक भिखारी नहीं बल्कि व्यापारी बन चुका हूँ।

भारतीय मनीषियों ने संभवत: इसीलिए स्वयं को जानने पर सबसे अधिक जोर दिया और फिर कहा-

सोऽहं
शिवोहम !!
समझ की ही तो बात है?

भिखारी ने स्वयं को जब तक भिखारी समझा वह भिखारी रहा, उसने स्वयं को व्यापारी मान लिया व्यापारी बन गया।

जिस दिन हम समझ लेंगे कि मैं कौन हूँ?
अर्थात मैं भगवान का अंश हूँ।

फिर जानने समझने को रह ही क्या जाएगा?

आत्मविश्वास
(कविता)

संयुक्ता दास
प्रबंधक (कार्मिक)
मॉयल लिमिटेड,नागपूर

ये आसमां छीन गया तो क्या? नया ढूंढ लेंगे,
हम वो परिंदे नहीं जो उड़ना छोड़ देंगे।

मत पूछ, हौसलें हमारे आज कितने निडर हैं,
एक नई शुरुआत, नया आरम्भ तय है।

माना अभी हम नि:शब्द है। ये पारावर छूट गया तो क्या?
नया सागर ढूंढ लेंगे, हम वो कश्तियाँ नहीं जो तैरना छोड़ देंगे।
कदम चलते रहेंगे जब तक स्वास हैं,
परिस्थिति से परे

स्वयं पर हमें विश्वास है, एक पथ मिला नहीं तो क्या नई राहें ढूंढ लेंगे,
हम वो मुसाफिर नहीं जो चलना छोड़ देंगें।

ख्वाबों पे विश्वास रखते हैं, हम मंजिलों से राब्ता रखते हैं,
नशा हमें हमारी फितरत का, हर हार करती हैं बुलंद इरादा जीत का।

ये मुकाम नहीं हासिल तो क्या?
नये ठिकाने ढूंढ लेंगे, हम वो शय नहीं जो अपनी तलाश छोड़ देंगें।
हम वो परिंदे नहीं जो उड़ना छोड़ देंगे।

प्रतिमा मिश्रा
कनि. कार्यालय अधिक्षक (कार्मिक)
डोंगरी
बुर्जुग खान

बेटो को दें अच्छे संस्कार

हर पुरुष की सफलता के पिछे नारी का हाथ होता है यह पुरुष वर्ग भूले नही। बिना शिक्षा के किसी भी बदलाव की कल्पना करना संभव नही है। इसी तरह कन्या के प्रति समाज की सार्थक सोच बनाने में बच्चों को सुसंस्कारित बनाकर ही हम कोई बदलाव ला सकतें है। ऐसे में सभी अभिभावकों को बचपन से ही अपने बच्चों में संस्कार डालने चाहिये कि वें लड़कियों के प्रति सम्मान जनक व्यवहार करें लड़के अपनी बहनों के साथ-साथ प्रत्येक लडकियों का सम्मान करने की आदत डालें।

सरकार को भी महिलाओं की रक्षा तथा सम्मान का एक विषय/पाठ्यक्रम पाठशालाओं में पढाने पर जोर देना चाहिये जिससे आये दिन महिलाओ पर हो रहे अत्याचार/ बलात्कार/ दहेज प्रथा/ कन्या भ्रूण जैसी कुप्रथा पर रोक लगे, समाज की सोच में गुणात्मक बदलाव आयें। झॉसी की रानी लक्ष्मी बाई, सावित्रीबाई फुले, अहिल्या बाई होलकर,कल्पना चावला,पी.टी.उषा. बछेन्द्री पाल, इंदिरा गांधी इत्यादी ऐसी कई स्त्रीयां है जिनकी गौरव गाथा लिखने लगे तो किताबो के पन्ने कम पड जायेगें ऐसी महान स्त्रीयों की गौरव गाथा पाठ्यक्रम में अनिवार्य करना चाहिये, जिससे समाज तथा समाज की सोच बदलेगी एवं स्त्री भूण हत्या, सामाजिक बुराई दहेज प्रथा पर रोक लगेगी।

सद्भावना (कविता)

दिव्येश लिम्बाचिया
वरि.सहा. (वित्त)
सी.एम.एस. ऑफिस, नागपुर

इतनी शक्ति हमे देना दाता।
कि मुल्क में भावना का समुंदर भरा रहे।

क्रोध बैर के जालों से बचना।
हरहृदय में भावना की ज्योत जलाना।।

रूखी सूखी ही सही इक झोपड़ी ही सही।
पर भुखा, निर्वस्त्र न हो कोई मुल्क में।।

क्या भला हो रहा, क्या बुरा हो रहा,
बस इसकी पहचान कर सके हम।।

इतनी शक्ति हमे देना दाता।
कि मुल्क में भावना का समुंदर भरा रहे।

दीपक

दिनेश कनोजे
'देहाती'
यांत्रिक विभाग,
तिरोड़ी खान

दीपक तुम हो तम् हरने वाले।
उल्लास जीवन का भरने वाले।

रुकें कब हैं विपदा के रोकने से,
सदा प्रगति पथ पर चलने वाले।

राष्ट्र हित में योगदान सबका हो,
बुझे न शौर्य पथ पर जलने वाले।

जीवन मरण उसकी मर्जी से हैं,
आस्था के प्राण नहीं निकलने वाले।

जो डरे तो आशाएं भी धूमिल होंगी,
ठहरते नहीं उम्मीद पर मचलने वाले।

वक्त तो उनका भी नहीं हुआ 'देहाती',
विकट विपदा में थे जो संभलने वाले।

स्लोगन

उज्वला वानखेडे
वरिष्ठ सहायक (का. एवं. प्र.)

सोधी सुगंध, मीठी सी भाषा,
गर्व से कहो हिन्दी है मेरी भाषा।

जैसे रंगो के मिलने से खिलता है बसंत,
वैसे भाषाओ मिशरी सी बोलती है हिंदी।

पुरे राष्ट्र की आशा है, हिंदी अपनी भाषा है,
जात-पात के बंधन को जोड़े हिंदी सारे देश को जोड़े।

जब तक सूरज चाँद रहेगा
हिंदी तेरा नाम रहेगा।

भाषा नही होती बुरी कोई, क्यों हमने मर्यादा खोई,
क्यों जागृति के नाम पर हमने स्वभाषा ही डुबोई।

जे राष्ट्र भाषा ना सुन सके, वो बहरा है,
राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है।

बहुत सहज अभिव्यक्ति है हिंदी,
हर देशवासी की भाषा है हिंदी

माथे पर है जो स्थान बिदी का,
भाषाओं में वही स्थान है हिंदी का।

हमारी आन हिंदी, हमारी शान है हिंदी,
फलक पर विश्व के देखो, मेरी पहचान है हिंदी।

निज भाषा का ज्ञान ही उन्नति की राह पर लेकर जाना है,

केवल एक दिन ही नही हमें रोजाना हिंदी दिवस मनाना है। जीवन में अगर सफलता पाना है, तो शिक्षा को अपनाना है।

शिक्षा ही सफलता की सीढ़ी है,
इससे आने वाली पीढ़ी सवरती है।

धन से शिक्षा नही लेकिन शिक्षा से
धन कमाया जा सकता है।

हम सबका बस एक ही नारा,
पढ़ना लिखना लक्ष्य हमारा।

देश की उँची शान करे हम हिंदी में काम करे।
हिंदी उन सभी गुणों से अलंकृत है, जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषा की अग्रणी श्रेणी में समासीन हो सकती है।

जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है. वह उन्नत नही हो सकता।

हर काम की एक अपनी गरिमा है और हर काम को अपनी पूरी क्षमता से करने मे ही संतोष मिलता है।

आजादी की रक्षा केवल सैनिको का काम नही है,
पूरे देश को मजबूत होना होगा।

कर भला तो हो भला

नाम : भारती रमेश पिल्ले
पदनाम : वरिष्ठ आशुलिपिक
विभाग : योजना एवं विविधता

एक प्रसिध्द राजा था जिसका नाम रामधन था । अपने नाम की ही तरह प्रजा सेवा ही उसका धर्म था । उनकी प्रजा भी उन्हें राजा राम की तरह ही पुजती थी। राजा रामधन सभी की निष्काम भाव से सहायता करते थे फिर चाहे वो उनके राज्य की प्रजा हो या अन्य किसी राज्य की। उनकी ख्याति सर्वत्र थी । उनके दानी स्वभाव और व्यवहार के गुणगान उसके शत्रु राजा तक करते थे। उन राजाओं में एक राजा था भीम सिंह, जिसे राजा रामधन की इस ख्याति से ईर्ष्या थी। उस ईर्ष्या के कारण उसने राजा रामधन को हराने की एक रणनीति बनाई और कुछ समय बाद रामधन के राज्य पर हमला कर दिया । भीम सिंह ने छल से युद्ध जीत लिया और रामधन को जंगल में जाना पड़ा । इतना होने पर भी रामधन की लोकप्रियता में कोई कमी नहीं थी। हर जगह उन्ही की बाते चलती थी । जिससे भीम सिंह को चैन न था उसने राजा रामधन को मृत्युदंड देने का फैसला किया। उसने ऐलान किया कि जो राजा रामधन को पकड़ कर उसके सामने लायेगा वो उसे सौ सोने की दीनार देगा ।

दूसरी तरफ, राजा रामधन जंगलों में भटक रहे थे । तब उन्हें एक राहगीर मिला और उसने कहा – भाई ! तुम इसी जगह के लगते हो। क्या मुझे राजा रामधन के राज्य की तरफ का रास्ता बता सकते हो? राजा रामधन ने पूछा – तुम्हे क्या काम हैं राजा से? तब राहगीर ने कहा – मेरे बेटे की तबियत ठीक नहीं उसके इलाज में सारा धन चला गया। सुना हैं राजा रामधन सभी की मदद करते हैं सोचा उन्ही के पास जाकर याचना करूँ । यह सुनकर राजा रामधन राहगीर को अपने साथ लेकर भीमसिंह के पास पहुँचे। उन्हें देख दरबार में सभी अचंभित थे ।

राजा रामधन ने कहा – हे राजन! आपने मुझे खोजने वाले को सौ दीनार देने का वादा किया था। मेरे इस मित्र ने मुझे आपके सामने पेश किया हैं। अतः इसे वो सौ दीनार दे दे। यह सुनकर राजा भीम सिंह को अहसास हुआ कि राजा रामधन सच में कितने महान और दानी हैं। और उसने अपनी गलती स्वीकार की। साथ ही राजा रामधन को उनका राज्य लौटा दिया और सदा उनके दिखाये रास्ते पर चलने का फैसला किया। दोस्तों इसी को कहते हैं कर भला तो हो भला ।

कहाँ एक तरफ भीमसिंह राजा रामधन को मारना चाहता था और अंत में राजा रामधन की करनी देख वो लज्जित हुआ और उन्हें उनका राज्य लौटा दिया और स्वयं को उनके जैसा बनाने में जुट गया ।

महान लोग सही कहते हैं कर भला तो हो भला। रामधन की करनी का ही फल था जो वो हारने के बाद भी जीत गया। उसने जिस तरह सभी की मदद की उसकी मदद अंत में उसी के काम आई । इसलिए कहते हैं मनुष्य को अपने कर्मो का ख्याल करना चाहिये। अगर आप अच्छा करोगे तो अच्छा ही मिलेगा। माना कि कष्ट होता हैं लेकिन अंत सदैव अच्छा होता हैं । कर भला तो हो भला यह कहानी आपको कैसी लगी? ऐसी ही मुहावरों की कहानी अपने बच्चों को सुनाये जिससे उन्हें इन मुहावरों के अर्थ याद रहेंगे और उन्हें इन मुहावरों का सही अर्थ पता चलेगा और वे अपने जीवन में अच्छे मार्ग पर चलने योग्य होंगे।

संकटराम ब्रम्हवंशी
प्रशिक्षु सहा. सह हिंदी अनुवादक

हिन्दी आशुलिपि परिचय

अंग्रेजी के शार्टहैंड शब्द के लिए हिन्दी में आशुलिपि, संकेत लिपि, शीघ्रलिपि, त्वरा लेखन तथा लघु-लेखन आदि कई शब्दो का प्रयोग किया जाता है। आशुलिपि दो शब्दो से मिलकर बना है-आशु और लिपि। आशु का अर्थ है-संक्षिप्त रूप सें एवं लिपि का अर्थ है-लिखना। ध्वनि के आधार पर ज्यामितिय रेखाओं द्वारा किसी भाषा को तीव्र गति से लिखने व पढ़ने की कला को आशुलिपि कहते है। अत: आशुलिपि न केवल ध्वनि लेखन है बल्कि कम से कम रेखाओं के द्वारा अधिक-से-अधिक ध्वनिंयो को लिखना है। आशुलिपि में हिन्दी भाषा के 33 व्यंजन वर्णो के लिए उनके आधे रेखा चिन्ह है। जिस कारण यह हिन्दी भाषा की लेखन प्रणाली से अधिक व्यवहारिक तथा श्रेष्ठ मानी गई है।

आशुलिपि में व्यंजनो के लिए जो रेखाएं निर्धारित की गई है वे बहुत ही सरल व स्पष्ट है। इन रेखाओं के द्वारा हिन्दी के शब्दो को लिखना व पढ़ना बहुत ही सरल है। हिन्दी भाषा सीखने से पहले हिन्दी भाषा का ज्ञान होना भी आवश्यक है क्योंकि आशुलिपि में केवल मुख्य ध्वनियों को ही लिखा जाता है और अर्थ के अनुसार ही उसका अनुवाद प्राप्त किया जाता है।

आशुलिपि कला सीखने के लिए यह आवश्यक है कि इसका अभ्यास प्रतिदिन किया जाए। अगर प्रशिक्षार्थी इसका अपनी इच्छानुसार कभी अभ्यास करे या कभी ना करे तो वह इस कला को नही सीख सकेगा। यदि प्रशिक्षार्थी प्रतिदिन एक घंटा या इससे अधिक आशुलिपि का अध्ययन एवं अभ्यास करता है तो कुछ समय वे वह इस कला को तीव्र गति से लिखना एवं पढ़ना सीख जाएगा।

हिन्दी आशुलिपि की विभिन्न प्रणालियों में मानक आशुलिपि को ही श्रेष्ठ प्रणाली माना गया है।

आशुलिपि का विकास

हिन्दी आशुलिपि का इतिहास भारत के स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास से जुड़ा हुआ है। 19 वीं शताब्दी के अंत में भारत में ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध असंतोष व्यापक रूप से धारण कर चुका था। उस समय देश के राष्ट्रीय नेता ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध हिन्दी में भाषण देते थें। राष्ट्रीय नेताओं की प्रेरणा पर काशी नागरिक प्रचारिणी सभा द्वारा पहली बार हिन्दी आशुलिपि की एक पुस्तक 1907 ई.में प्रकाशित हुई। पहली बार 1946 में सेन्ट्रल लेजिस्लेटिव काऊंसिल मे चार हिन्दी आशुलेखकों की नियुक्ति हुई और हिन्दी आशुलिपि को प्रोत्साहन मिला। आजादी के बाद हिन्दी को राजभाषा का स्थान प्राप्त होने से कई आशुलिपि की पुस्तके लिखी गई।

आशुलिपि के अंग

आशुलिपि के तीन अभिन्न अंग है-श्रुतलेख लिखना, लिप्यांतरण करना एवं टंकण करना। आशुलिपि एक कला है जिस में मुख्य रूप से तीन प्रकार के कौशल को शामिल किया गया है।

1. सुनने की कला: भिन्न भिन्न प्रकार के लोगो के

उच्चारण को समझने की क्षमता।

2.मानसिक कौशल: आउट-लाईन को याद रखना, शब्दों को पहचानना तथा तीव्र गति से बोले गए शब्दों को लिखना।

3.मैनुअल कौशल (हाथ से लिखने की कला) : श्रुतलेखन के दौरान पेन, पेंसिल और नोटबुक आदि को पकड़ने की कुशलता एवं श्रुतलेख को टंकण करना।

आशुलिपि का महत्व

शब्दो को पूर्ण रूप से लिखने के बजाए आशुलिपि में रेखाओं के द्वारा तीव्र गति से लिखा जा सकता हैं। लोगो को रोजगार प्राप्त होता है। इसके द्वारा समय और उर्जा की बचत होती है।

मस्तिष्क मे अचानक आये विचारो को तुरंत लिखा जा सकता है साथ ही गोपनीयता को बनाए रखा जा सकता है। आशुलिपि का एक विस्तृत क्षेत्र है। इसका प्रयोग न केवल भाषणों को लिखने के लिए किया जाता हैं, बल्कि किसी प्रकार के पत्र-व्यवहार व दूसरे दस्तावेजों को लिखने के लिए किया जाता है। इसके अतिरिक्त रेडियो और टेलिविजन के द्वारा प्रसारित समाचार आदि को तीव्र गति से लिखने के लिए भी इसका प्रयोग किया जाता है।

आशुलिपिक के आवश्यक गुण

एक अच्छे आशुलिपिक में अच्छा भाषा ज्ञान एवं सामान्य ज्ञान होना आवश्यक होता है, जिससे की वह वक्ता के सही आशय को समझ सके और प्रतिलेखन कर सके। आशुलिपिक में नियमियता का गुण परम आवश्यक हैं। वह आत्मविश्वासी, सहनशील, शान्ति प्रिय एवं धैर्यशील होना चाहिए । साथ ही विनयशील, मृदुभाषी एवं व्यवहार कुशल होना चाहिए। आकर्षक व्यक्तित्व का होना चाहिए। ईमानदार और अनुशासित होने के साथ साथ एकाग्रता का भी गुण आवश्यक है।

भारत में दहेज प्रथा

दहेज प्रथा

दहेज प्रथा बहुत पुरानी प्रथा है इतिहास के मुताबिक त्रेता युग में श्री राम जी का राजा जनक ने बहुत धन-द्रव्य आदि दहेज स्वरुप भेंट किये थे इस के बाद फिर कलयुग में तो इस प्रथा ने अपने पैरो को बढाकर चकित ही कर दिया है । परिणाम स्वरुप आज यह अत्यधिक चर्चित और निंदित राष्ट्रीय समस्या बनकर सामने आयी है ।

दहेज नही है यह पैसा है, क्या आपका चरित्र भी ऐसा है । दहेज का कारण यह बताया जाता है कि आज हमारा समाज पुरुष प्रधान समाज है । इस आधार पर आज नारी को पुरुष के सामने हीन और कमजोर समझा जाता है । नारी की इस हिनता को दूर करने और उसे पूरुष के समकक्ष सम्मान दिलाने हेतु पुरुष को नारी पक्ष की ओर से दहेज दान दिया जाता है । दहेज देने की इस प्रक्रिया में स्वार्थ ने ऐसी घुसपैठ कर ली है कि आज दहेज एक बली देवी के समान बन गया है। इसलिये भारत की बेटियॉ आये दिन दहेज रुपी राक्षस की बली चढ़ रही है । वर्तमान में आप देख ही रहे हो कि दहेज प्रथा के कारण महिलाओ का कितना शोषण हो रहा है उनको कितना प्रताडित किया जा रहा है आये दिन खबरो में आते रहता है कि

1. दहेज के लिये लड़के वालों ने लड़की को जिंदा जलाकर मार डाला।

2. दहेज ना देने या कम दहेज के कारण महिला को घर से बाहर निकाल दिया जाता है।

"'समाज के तरीको ने ही बनाया है बेटी को पराया , दहेज हो या कन्या भ्रूण हत्या अपनो ने ही कहर बरसाया'' आओ चलो एक अभियान चलायें भारत को दहेज मुक्त बनाये।

चंदा
डोंगरी बुर्जुग खान

परख क्वॉलिटी सर्कल ने जीता सुपर गोल्ड अवार्ड।

क्षेत्रीय क्वॉलिटी सर्कल सम्मेलन अपनी प्रतिष्ठा और भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। नागपुर में रामदेव बाबा इंजीनियरिंग कॉलेज में संपन्न हुए इस सम्मेलन में कुल 25 संस्थानों की 95 टीमों ने हिस्सा लिया जिसमें मॉयल लिमिटेड की परख क्वालिटी सर्कल तिरोड़ी खान ने पुन: श्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए प्रतिष्ठित चार अवार्ड जीता। जिसमें ''टिप्पर के स्टार्टिंग सिस्टम के बार-बार फेल होने की समस्या'' के निराकरण विषय पर केस स्टडी प्रस्तुत करने पर ''सुपरगोल्ड'' अवार्ड प्राप्त किया। बेस्ट क्यूसी कविता के लिए प्रथम दिनेश कनोजे, द्वितीय समिर शुक्ला, बेस्ट क्यूसी पोस्टर के लिए अखिलेश कुमार को पुरस्त किया गया। परख क्वॉलिटी सर्कल के टीम लीडर दिनेश कनोजे, डिप्टी लीडर हुबलाल जेठूमल एवं सदस्य अखिलेश कुमार, समीर शुक्ला, शुभम राऊत के साथ डिप्टी फैसीलिटेटर संजीव पंडा ने मिलकर केस स्टडी प्रस्तुत किया। निदेशक मानव संसाधन श्रीमती उषा सिंह के मार्गदर्शन में प्रगतिशील परख क्वॉलिटी सर्कल की इस सफलता में टीम के कोऑर्डिनेटर एवं तिरोड़ी खान प्रबंधक श्री दीपेन्द्र पानतावने फेसीलिटेटर श्री सोमितडे ने विशेष योगदान दिया है।

कैमरे में कैद कुछ पल

मॉयल लिमिटेड
गांधी जयंती
02 अक्टूबर

MOIL LIMITED
60th Annual General Meeting
23rd September, 2022

मॉयल लिमिटेड
नागपुर

कैमरे में कैद कुछ पल

मॉयल लिमिटेड
भारतरत्न
डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर
महापरिनिर्वाण दिन
६ दिसम्बर

मॉयल लिमिटेड, नागपुर

MOIL LIMITED

Buyer-Seller Meet with SC, ST
and

कैमरे में कैद कुछ पल

सतर्कता जागरुकता सप्ताह-२०२२
३१ अक्टूबर से ६ नवंबर २०२२
मॉयल
MOIL LTD.

AWARENESS WEEK-2022

मॉयल
MOIL

मॉयल लिमिटेड
सतर्कता जागरुकता सप्ताह-२०२२
३१ अक्टूबर से ६ नवंबर २०२२
भ्रष्टाचार मुक्त भारत-विकसित भारत
सतर्कता जागरुकता जनजागरण अभियान

मॉयल – समाचार पत्र की कुछ झलकियाँ

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह से मिले मॉयल सीएमडी सक्सेना

बालाघाट (जबलपुर एक्सप्रेस)।

मध्यप्रदेश के इंदौर शहर में आयोजित ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट के अंतर्गत देश विदेश के अनेक उद्योगपतियों के द्वारा उपरोक्त कार्यक्रम में भाग लेकर अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है। इसी तारतम्य में भारत सरकार के इस्पात मंत्रालय के अंतर्गत आने वाले मिनी रत्न सरकारी उपक्रम ए शेड्यूल कंपनी मॉयल लिमिटेड के नवनियुक्त अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक अजीत कुमार सक्सेना ने अपने सहयोगी निदेशक वित्त राकेश तुमाने ने निदेशक मानव संसाधन श्रीमती उषा सिंह एवं मैकेनिकल विभाग के प्रमुख राजेश वर्मा के साथ मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान से सौजन्य भेंट कर मॉयल की कार्यप्रणाली एवं प्रगति से अवगत कराया। उल्लेखित है कि मॉयल की मध्यप्रदेश में भरवेली, तिरोड़ी, उकवा, सीतापठोर में चार खदाने हैं। वहीं मध्यप्रदेश मॉयल का महाराष्ट्र के बाद शेयर होल्डर भी है। मुख्यमंत्री के साथ इस मुलाकात को महत्वपूर्ण माना जा रहा है क्योंकि यह मुलाकात उस समय हुई है जब इंदौर में इन्वेस्टर्स समिट के बहाने मध्यप्रदेश शासन प्रदेश में औद्योगिक प्रगति को नया आयाम प्रदान करने के लिए प्रयासरत है।

MOIL के उत्पादन और परिचालन में 10% की वृद्धि

नागपुर, बिजनेस कनेक्ट. मॉयल के निदेशक मंडल ने 30 सितंबर को समाप्त तिमाही और छमाही के वित्तीय परिणामों को मंजूरी दी. मॉयल ने वित्तीय वर्ष की पहली छमाही में मैंगनीज अयस्क के उत्पादन में 10% की वृद्धि दर्ज की है. यह पिछले वर्ष की समान अवधि की तुलना में 2022-23 में 5.63 लाख मीट्रिक टन रहा. वर्तमान में स्टील उद्योग द्वारा चुनौतियों का सामना करने के बावजूद वित्त वर्ष 2022-23 की पहली छमाही के दौरान टैक्स से पहले मॉयल का परिचालन लाभ 11% बढ़कर 128.46 करोड़ हो गया है. इसी तरह वित्त वर्ष 2021-22 की पहली छमाही की तुलना में कर से पहले लाभ और कर के बाद लाभ क्रमशः 159.42 करोड़ और 122.03 करोड़ से बढ़कर क्रमशः 167.30 करोड़ और 130.12 करोड़ हो गया है. सीएमडी उषा सिंह ने इस अवसर पर उल्लेख किया कि कंपनी वित्तीय वर्ष की दूसरी छमाही में उत्पादन और बिक्री के संबंध में बेहतर प्रदर्शन के लिए तैयार है.

अजीत कुमार सक्सेना मॉयल के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक बने

नागपुर | अजीत कुमार सक्सेना ने मॉयल लिमिटेड के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक के रूप में पदभार ग्रहण किया। इस कार्यभार से पहले वे आरआईएनएल-विशाखापत्तनम इस्पात संयंत्र में निदेशक (संचालन) के पद पर कार्यरत थे। उनके पास तकनीकी, परिचालन और परियोजना प्रबंधन क्षेत्रों में व्यापक अनुभव के साथ इस्पात क्षेत्र में 36 वर्षों का अनुभव है। उन्होंने 1986 में स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (सेल) में एक प्रबंधन प्रशिक्षु (तकनीकी) के रूप में अपना करियर शुरू किया था। सेल में अपने लंबे कार्यकाल के दौरान मुख्य महाप्रबंधक, मिल्स, इस्को, बर्नपुर और भिलाई स्टील प्लांट के महाप्रबंधक जैसे विभिन्न पदों पर रहे। वे इस्पात मंत्रालय, भारत सरकार से वर्ष 2000 के लिए 'यंग मेटलर्जी ऑफ द ईयर अवार्ड' के प्राप्तकर्ता हैं।

कार्यकारी अभियंत

दैनिक भास्कर

मॉयल ने दिसंबर में 1.4 लाख रुपए टन मैगनीज अयस्क का किया रिकॉर्ड उत्पादन

नागपुर | सरकारी उपक्रम मॉयल ने दिसंबर, 2022 में 1,41,321 टन मैगनीज अयस्क के साथ इस माह के अब तक के सर्वाधिक उत्पादन का रिकार्ड बनाया है।

इस्पात मंत्रालय की सोमवार को जारी विज्ञप्ति के अनुसार दिसंबर, 2022 का कंपनी का उत्पादन नवंबर, 2022 की तुलना में 18 प्रतिशत अधिक रहा। कंपनी ने दिसंबर में 1,64,235 टन मैगनीज अयस्क की बिक्री की। मॉयल के चेयरमैन एवं प्रबंध निदेशक (सीएमडी) अजीत कुमार सक्सेना ने बताया कि इस तरह के प्रदर्शन को दर्ज करने के लिए मॉयल टीम का साथ काम करना बड़ी खुशी की बात है और उन्होंने भरोसा जताया कि ये प्रदर्शन जारी रखा जाएगा। श्री सक्सेना ने अभी 29 दिसंबर को सीएमडी का कार्यभार संभाला है। मॉयल लिमिटेड केंद्रीय इस्पात मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण वाली मिनीरत्न श्रेणी-1 की कंपनी है। मॉयल लगभग 45 प्रतिशत बाजार हिस्सेदारी के साथ देश में मैंगनीज अयस्क की सबसे बड़ी उत्पादक है। महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश में इसकी 11 खाने हैं। कंपनी ने 2030 उत्पादन लगभग दोगुना करके 30 लाख टन तक पहुंचाने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य रखा है और गुजरात, राजस्थान और ओडिशा राज्य में भी व्यापार के अवसर तलाश रही है।

मॉयल – समाचार पत्र की कुछ झलकियाँ

मॉयल ने दर्ज की रोमांचक जीत

भास्कर खेल | नागपुर.

नागपुर जिला फुटबॉल एसोसिएशन द्वारा आयोजित एलीट डिवीजन लीग के तहत गुरुवार को खेले गए मैच में मॉयल एकादश ने नागपुर ब्लूज के विरुद्ध 2-0 की रोमांचक जीत हासिल की। गोल रहित मध्यांतर के बाद विजेता टीम ने उत्तरार्द्ध में दोनों गोल किया। मॉयल एकादश की ओर से रोहित शर्मा ने 75वें और वैभव शर्मा ने 82वें मिनट पर स्कोर किया।सुयोग नगर स्थित जिला फुटबॉल संघ के मैदान पर खेले गए मैच में मॉयल को नागपुर ब्लूज की ओर से कड़ी चुनौती मिली, लेकिन पराजित टीम को स्कोर नहीं कर पाने का खामियाजा भुगतना पड़ा। मैच के पहले हाफ में ब्लूज ने एक-दो ठोस मूव जरूर बनाए, लेकिन गोल दागने की जद्दोजहद के बाद उत्तरार्द्ध में सफलता मॉयल एकादश के हाथ लगी। मुकाबले के दौरान विजेता टीम के युवराज दुधनाग को 21वें जबकि ब्लूज के विवेक मेश्राम को 22वें, आर्यन सालवे को 31वें और निखिल दुर्गे को 42वें मिनट पर पीला कार्ड दिखाया गया। वहीं सुपर डिवीजन लीग के तहत खेले गए एक मैच में इलेवन स्टार ने ताज क्लब को 3-0 से परास्त कर दिया। विजेता टीम की ओर से मोहम्मद उमर ने 14वें मिनट पर पहला गोल दागा। वहीं मोहम्मद शोएब ने 23वें मिनट पर दूसरा गोल जमाते हुए स्कोर को 2-0 कर दिया। इसके बाद ताज क्लब की पकड़ कमजोर पड़ गई। दूसरे हाफ में इलेवन स्टार का ही पलड़ा भारी रहा।

केन्द्रीय इस्पात सचिव की मॉयल को सौजन्य भेंट

बालाघाट (जबलपुर एक्सप्रेस)।

भारत सरकार के केन्द्रिय इस्पात मंत्रालय के सचिव संजय सिंह एवं उनके मंत्रालय में सहयोगी सुकृति लिखी अतिरिक्त सचिव और वित्तिय सलाहकार अभिजीत नरेन्द्र, जे.टी. सचिव ने गत दिवस मॉयल को सौजन्य भेंट देते हुए कंपनी की गुमगांव खदान एवं मुख्यालय में आयोजित सामान्य कार्यक्रम में उपस्थित होकर विभिन्न विषयों पर चर्चा किया। इस अवसर पर मॉयल के नवनियुक्ति अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक अजीत सक्सेना एवं वर्तमान में प्रभारी अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक मानव संसाधन श्रीमती उषा सिंह निदेशक वित्त राकेश तुमाने, निदेशक वाणिज्य पी.वी.पी. पटनायक, निदेशक उत्पादन एवं योजना, एम.एम. अब्दुल्ला के साथ अन्य विभागीय अधिकारी भी भ्रमण उपस्थित रहे। इस्पात सचिव एवं अन्य अधिकारियों ने गुमगांव भूमिगत खदान का भ्रमण कर कार्यो का निरीक्षण किया। देश में मैंगनीज के आयात को कम करने के लिये खनन संचालन और कंपनी की विस्तार योजना से संबंधित रणनीतिक मुद्दों पर वरिष्ठ प्रबंधन के साथ व्यापक विचार विमर्श किया। इसके बाद कर्मचारियों के क्रास सेक्शन के साथ हेड आफिस नागपुर में एक विचार मंथन सत्र आयोजित किया गया। जिसमें इस बात पर जोर दिया गया कि कंपनी को उच्च उत्पादन एवं विकास के लिये प्रयास करना चाहिये ताकि आत्मनिर्भर भारत के प्रति प्रधानमंत्री के दृष्टिकोण में मैंगनीज अयस्क का उत्पादन पूरा किया जा सके। इस अवसर पर प्रभारी सीएमडी ने विशेष रूप से सचिव इस्पात और मंत्रालय के सभी वरिष्ठ अधिकारियों को धन्यवाद दिया कि उन्होंने मॉयल के कर्मचारियों को उत्पादन बढ़ाने और कंपनी के प्रदर्शन को उत्कृष्ट बनाने की दिशा में किस तरह से कार्य किया जाये इसका मार्गदर्शन किया। मॉयल इस्पात मंत्रालय भारत सरकार के प्रशासन नियत्रंण के अधीन अनुसूची ए मिनी रत्न श्रेणी-1 टीपीएसई है मॉयल देश में मैंगनीज अयस्क का सबसे बड़ा उत्पादक है और महाराष्ट्र मध्यप्रदेश राज्य में 11 खदानों का संचालन करता है। मॉयल के पास देश का 34 प्रतिशत मैंगनीज अयस्क भंडार है और यह घरेलू उत्पादन में 45 प्रतिशत का योगदान दे रहा है। कंपनी के पास वित्त विषय 2024-25 तक अपने उत्पादन को लगभग दुगना करके 25 लाख करने का महत्वाकांक्षी विजन है। मॉयल गुजरात राज्य मध्यप्रदेश, राजस्थान और उड़ीसा राज्य के अन्य क्षेत्रों में भी व्यवसायिक अवसर तलाश रही है।

▸ नागपुर ▸ 7 से 13 जनवरी 2023

दिसंबर माह में मॉयल ने किया रिकॉर्ड उत्पादन : सक्सेना

▸ नागपुर//प्रतिनिधि ◂

भारत सरकार के इस्पात मंत्रालय के अधीन कार्यरत मॉयल लिमिटेड ने गत दिसंबर, 2022 में रिकॉर्ड उत्पादन कर नई उपलब्धि हासिल की है। कंपनी की भरवेली, उकदा, तिरोड़ी, सीतापठौर व भंडारा, नागपुर जिले की खदानों में मैंगनीज खनन का कार्य बड़े पैमाने पर हो रहा है, ऐसा प्रतिपादन मॉयल के नवनियुक्त अध्यक्ष व सह प्रबंध निदेशक अजीत कुमार सक्सेना ने अपना पदभार ग्रहण करने के बाद कहा।

मॉयल ने दिसंबर, 2022 में बहुवर्षीय रिकॉर्ड तोड़ते हुए 1,41,321 टन का सर्वश्रेष्ठ उत्पादन दर्ज किया है। अपने निर्धारित क्षमता स्तर पर उत्पादन करते हुए नवम्बर,2022 की तुलना में उत्पादन में 18 प्रतिशत की वृद्धि की है। नवम्बर, 2022 की तुलना में लगभग 91 प्रतिशत की वृद्धि के साथ दिसम्बर महीने के लिये 1,64,235 टन की बिक्री भी शानदार रही। उन्होंने कहा कि यह उपलब्धि निश्चित रूप से कंपनी के कामगार कर्मचारी एवं अधिकारियों के बीच टीम वर्क का सबसे बेहतरीन उदाहरण है। इसके लिये सभी पक्ष बधाई के पात्र हैं और विश्वास है कि सफलता और उपलब्धि और टीम वर्क का यह क्रम भविष्य में इसी प्रकार बना रहेगा, ताकि कंपनी प्रगति के पथ पर निरंतर अग्रसर होकर उपलब्धियों के नये कीर्तिमान स्थापित करे। मॉयल भारत सरकार के इस्पात मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण के तहत अनुसूची ए मिनी रत्न श्रेणी सीपीएसई कंपनी है। मॉयल 45 प्रतिशत बाजार हिस्सेदारी के साथ देश में मैंगनीज अयस्क का सबसे बड़ा उत्पादक है, जो महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश राज्य में 11 खदानों का संचालन करता है। कंपनी का 2030 तक अपने उत्पादन को लगभग दुगना करके 3 मिलिटन तक पहुंचाने की महत्वाकांक्षी योजना है। मॉयल मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र के अलावा गुजरात, राजस्थान तथा उड़ीसा राज्य में भी व्यापार के अवसर की तलाश कर रहा है।

मॉयल में दक्षता जागरूकता सप्ताह

नागपुर. मिनी रत्न कंपनी मॉयल में दक्षता जागरूकता सप्ताह 2022 का आयोजन किया जा रहा है. सप्ताह का उद्घाटन मॉयल के सीएमडी एम.पी. चौधरी ने किया. कर्मचारियों को अखंडता की शपथ भी दिलाई. प्रमुख दक्षता अधिकारी प्रदीप कामले, निदेशक राकेश तुमाने, पीवीवी पट्टनाईक भी मोजूद थे. चौधरी ने सभी को मिलकर एक साथ भ्रष्टाचार से निपटने के लिए प्रयास करने की अपील की. कामले ने दक्षता सप्ताह पर विस्तार से समझाते हुए कहा कि इस वर्ष की थीम विकसित राष्ट्र के निर्माण के लिए भ्रष्टाचार मुक्त भारत है. मॉयल के विभिन्न खदानों में भी कार्यक्रमों का आयोजन किया गया. संचालन श्रीनिवास रामवनाथ ने किया तथा मनोज तिवारी ने आभार प्रकट किया. सफलता के लिए उमेश चरपे, शिवम दत्ता, अनिल जाम्बूलकर ने प्रयास किए.

आज़ादी का
अमृत महोत्सव

मॉयल
MOIL
मॉयल लिमिटेड, नागपुर
मॉयल
MOIL
आज़ादी का
अमृत महोत्सव
कवि सम्मेलन
एक शाम शहीदों के नाम
15 दिसम्बर 2022
गजेन्द्र सोलंकी
मोहन मुन्तज़िर
राधाकांत पाण्डेय
उपेन्द्र पाण्डेय

आज़ादी का अमृत महोत्सव

मॉयल MOIL

आजादी का अमृत महोत्सव आजादी के 75 साल और यहां के लोगों, संस्कृति और उपलब्धियों के गौरवशाली इतिहास को मनाने के लिए भारत सरकार की एक पहल है। यह महोत्सव भारत के लोगों को समर्पित है, जो न केवल भारत को उसकी विकासवादी यात्रा में लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं, बल्कि जिन में भारत को आत्मनिर्भर बनाने की क्षमता और शक्ति भी है। आजादी का अमृत महोत्सव की आधिकारिक यात्रा 12 मार्च 2021 को शुरू हुई, जिसने हमारी आजादी की 75 वीं वर्षगांठ के लिए 75 सप्ताह की उलटी गिनती शुरू की और 15 अगस्त 2023 को एक साल बाद समाप्त होगी।

जय हिंद...!